श्रीश्रीबृन्दावन लीला

हिन्दि अनुबाद.......

(सन १३५६, १८ भाद्र से २१ कार्त्तिक पर्यन्त)

प्रथम संस्करण

श्रीश्रीबृन्दावन लीला

हिन्दि अनुवाद

(सन १३५६, १८ भाद्र से २१ कार्त्तिक पर्यन्त)

प्रथम संस्करण

मूल्य

हिन्दी संस्करण

प्रकाशिका

श्रीमती मुक्तकेशी देबी

३३नं विडन स्ट्रीट

कलकत्ता-३

प्राप्तिस्थान

१। माँ-मणि
कुन्डाईवेन्टसाही, व्रजधाम, पुरी।

२। श्रीअमिय चरण भट्टाचार्य
३नं मोहनलाल स्ट्रीट, कलकत्ता-४।

३। श्रीतरनी चौधरी
८५बि, धर्मतला स्ट्रीट, कलकत्ता-१३।

४। श्रीमती मुक्तकेशी देबी
३३नं बिडन स्ट्रीट, कलकत्ता-६।

५। डाः बङ्किम चन्द्र साऊ (हौमिओपैथ)
दुमका पोः, सांवताल परगना।

६। श्रीनलिनी चैटर्औी
घिर्नि, पोखरा, मजफ्फरपुर।

मुद्राकर

श्रीवामनदास सेन

ट्रुथ प्रेस, ३नं नंदन रोड,

कलकत्ता-२५।
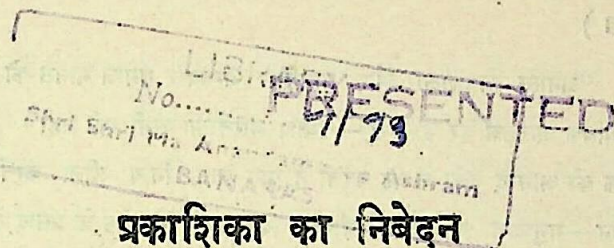
प्रकाशिका का निवेदन

१३५६ साल में माँ-मणि (श्रीमती सरोजिना मित्र) श्रीवृन्दावन में गईं। उस समय सद्गुरु श्रीश्री गोस्वामी प्रभु की कृपा से उन्होंने साधन जीवन की एक दुर्लभ अवस्था प्राप्त की और नित्य लीला दर्शन होने लगा। उसी समय से श्रीमन्महाप्रभु, गोस्वामी प्रभु, अद्वैत प्रभु और अनेक महापुरुषगण उनको दर्शन देकर कृतार्थ किया। बिशेषतः गोस्वामीप्रभु ने माँ-मणि को जो सब लीला दर्शन कराया है, आदेश दिया है और आज भी दे रहे हैं उनका कुछ अंश बंगला भाषा के भिन्न भिन्न पुस्तकों में प्रकाशित किया गया है। उनमें से श्रीश्री वृन्दावनलीला एक है। इन सब लीला दर्शन से आश्चर्य होने की कुछ नही है। भक्तमाल प्रभृति ग्रन्थ पाठ करने से हम जान सकते हैं कि अनेक बैष्णव महाजन और बहु साधकों ने नाना प्रकार कृपा लाभ करके यह सब लीला दर्शन किया है।

चैतन्य भागवत में है--

आज भी वही लीला करते हैं गौर राय।
कोई कोई भाग्यवान उन्हे देख पाय॥

श्रद्धेय श्री तरणी चौधरी महाशय ने माँ-मणि के त्रिवेणी पुस्तक के द्वितीय संस्करण के निवेदन में (इस पुस्तक का शेषांश श्रीश्रीवृन्दाबन लीला) लिखा है—

"अनात्म जड़शिक्षा और तामसिक अन्धकार समाज मानस को आज अत्यधिक आच्छन्न कर डाला है—तथापि भारतात्मा अभी मरी नही। दिव्य-लोक की आनन्द धारा में वह करती है पुण्य स्नान, नित्य लीला करती है दर्शन—मनुष्यत्व का चरम गौरव, दिव्यज्ञान और प्रेम के प्रसाद से वह बंचित नहीं हुई। आज भी वही अमृत नदी के प्रवाह को वहन करके ले जा रहे हैं कुछ संख्यक साधक-साधिका अपने अन्तर में। इन सब सौभाग्यवानों के अन्दर माँ-मणि हैं अन्यतम। धर्म केवल बात नही—किंबा आचोर-आचरण व अनुष्ठान नही—इन सब उपदेशों को पाठ करने से इसका सम्यक उपलब्धि करेंगे। धर्म जीवन को एक अपूर्व आनन्द की धारा में अभिषिक्त करता है, अन्तर्निहित अपराजेय शक्ति और दिव्य ज्ञान को प्रबुद्ध करता है।"

इस साल २६ बैशाख (१३६६ सन) पुरुषोत्तमधाम में मुझे माँ-मणि के श्रीचरण दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ दर्शन मात्र से ही मेरे हृदय में प्रगाढ़ भक्ति और श्रद्ध उत्पन्न हुई एवं उनके पुस्तकों को पाठ करके अनीर्बचनीय आनन्द और शान्ति प्राप्त की। गोंसाई जी ने एक स्थान में कहा है कि यदि इन पुस्तकों को हिन्दि भाषा में प्रकाशित किया जाय तो बंगाल के बाहर अनेक मनुष्य बिशेष उपकृत होंगे।

यह पढ़कर मैंने मनस्थ किया कि श्रीश्रीवृन्दाबन लीला को हिन्दि में छपवा कर उनके श्रीचरण में निबेदन करुँगी। उन लोगों की कृपा से बासना परिपूर्ण करने की भी सुविधा हो गई। मेरी भान्जी श्रीमती अरुणा भट्टाचार्य को अनुबाद करने के लिये कहने पर वह अत्यन्त आग्रह के साथ इस कार्य में व्रती हुई। यह अनुबाद २६ आषाढ़ माँ-मणि ने गोंसाई जी को सुनाया एवं प्रकाश करने की अनुमति प्राप्त कीया। उन्होंने हमलोगों

को आशीर्वाद किया। गोंसाई जी ने अरुणा को कहा है—महाप्रभु की कृपा से अरुणा का जीवन धन्य हो जायगा।……समय आने पर महाप्रभु दत्त प्रेमभक्ति लाभ करेगी। माँ-मणि के घर में जो श्रीगोपाल का विग्रह है उन्होने कहा है "हिन्दि में श्रीवृन्दावन लीला प्रकाश होने पर विशेष भगवतकार्य होगा ; धर्म जगत में अरुणा का नाम अक्षय हो कर रहेगा" उनलोगों के प्रचारव्रत में सेवा का अधिकार पाकर हम दोनों धन्य हो गईं। इस कृपा से वंचित न हो जाऊँ यही हमारी एकान्त कामना है।

प्रख्यात पण्डित और परम भागवत श्रीबसन्त कुमार चट्टोपाध्याय महाशय ने त्रिवेणी कि द्वितीय संस्करण में जो एक मुल्यवान भूमिका लिखा है उसका हिन्दी अनुबाद भी इस पुस्तक की भूमिका के रुप में प्रदत्त की गई है।

श्रीश्रीसीतारामदास ओंकारनाथजी की
चरणाश्रिता सेविका
श्रीमती मुक्तकेशी देवी।

निवेदन

श्रीश्रीगोस्वामी प्रभु के आदेश अनुसार मुझे यह बृन्दाबन लीला दर्शन लिखना पड़ा। गत भाद्र के महीने में पुरीधाम के मकान में एक दिन बृन्दाबन जाने की बात हुई, उसके बाद से बृन्दाबन आने के लिये प्राण में व्याकुलता होने लगी, कई दिन बाद बृन्दाबन आने के लिये कलकत्ते में निजी मकान में आई शरीर अस्वस्थ्य होने के कारण, आत्मीय स्वजन किसी की इच्छा नही थी कि मैं यहाँ आऊँ, उसके उपर कोई साथी नही, अकेले कभी कहीं नही गई थी, क्या होगा किस प्रकार आऊँ; यहाँ आने के लिये प्राण सर्वदा ही व्याकुल हो रहा है। किन्तु जब उन दयाल ठाकुर की कृपा होती है तब किसी प्रकार बाधा रोक नहीं सकती। सब बाधाओं को हटाकर ठाकुर किस प्रकार मुझे यहाँ ले आये, एक मात्र जिन्होने जनकी कृपा अनुभव की है वही ममझ सकेंगे।

जो हो, किसी प्रकार बृन्दाबन तो ले आये, धीर समीर कुञ्ज में रहने की व्यबस्था हुई, किसी प्रकार की असुविधा नही हुई, ठाकुर ने जैसे पहले ही से सब बन्दोबस्त कर रक्खा था।

श्रीश्रीगोंसाई जी की कृपा में व्रजलीला दर्शन करने का सोभाग्य हो रहा है; बात भी होती है। उन्होने लिखने को कहा है, उनके आदेशानुसार लिख रही हूं। जो कुछ दिखा रहे हैं व जो आनन्द में रक्खा है, मेरी क्षमता नही है कि मैं लिखकर बताऊँ। संसार में ऐसी कोई चीज नही

है जिसके साथ उन सब की तुलना हो। यह अवस्था मुझे साधन भजन के द्वारा नही प्राप्त हुई है, दयामय ठाकुर ने इस दीनहीना अनाथा को कृपा करके चरण में स्थान दिया है। मेरी जो कुछ है सब उन्ही का दिया हुआ है। ठाकुर जी की कृपाबिन्दु जिनको मिली है वे ही यह सब समझ सकेगे और विश्वास करेंगे। दयाल ठाकुर! तुम्हारी चरणों का सहारा करके, तुम्होरे ही अदेश के अनुसार श्रीवृन्दावन में जो कुछ दर्शन हुआ है, उस में से ही थोड़ा थोड़ा जो कुछ लिखा है वही यहाँ प्रकाश किया गया।

श्रीधाम वृन्दावन
रास पुर्णिमा।

श्रीश्री सदगुरु की चरणाश्रिता
माँ-मणि।

बिशेष निबेदन

श्रीश्रीगोंसाई जी और श्रीश्रीमन्‌महाप्रभु की इच्छा से श्रीश्रीवृन्दावन लीला का हिन्दी संस्करण प्रकाशित हुआ। इस बार गोंसाई जी ने कहा, "माँ किस प्रकार कठोर नियम से गुरु आज्ञा पालन करके ओर नाम साधन करके इस अवस्था को प्राप्त हुई हो इस संस्करण में लिखा देना।" इस लिये श्रीश्रीगोंसाइ जीं और श्रीश्रीमन् महाप्रभु के आदेश से किस प्रकार और कहाँ उनलोगों की कृपा लाभ की है विश्वासी भक्तों को बताया गया, आशा करती हूं कि वे इसको पाठ कर उपकृत होंगे।

मैंने अपनी तीस बर्ष की उम्र में श्रीश्रीगोस्वामी प्रभु के दामाद एवं शिष्य स्वर्गीय श्रीश्रीजगबन्धु मैत्र महाशय के पास दीक्षा प्राप्त की। दीक्षा के समय श्रीगुरुदेव ने कुछ बिधि-निषेध पालन करने के लिये उपदेश दिया था, उन नियमों को रक्षाकवच की तरह हृदय में धारण कर मैं यथासाध्य पालन करने की चेष्टा कर आ रही हूं। जैसे हमारे साधना में दूसरों का उच्छिष्ट खाना निषेध, इसलिये उस दिन से किसी के घर में या अपने किसी निकट आत्मीय के घर में पानी नही ग्रहण किया ; इसी प्रकार, विना पूछे कोई बात कहना, वृथा समय नष्ट करना, व बात बोलना इत्यादि अन्य छोटे मोटे विषयों को भी यथायथ पालन कर जा रही हूं।

श्रीगुरुदेव ने कहा था, "रात्रि तिन बजे से छः तक आसन में बैठ कर नाम करना अच्छा है, उस समय सब महापुरुष बिचरण करते हैं, जो कोई साधन-भजन करते हैं वे उनलोगों को सहायता करते हैं।" उस दिन से

उसी समय उठ कर साधन करती थीं। और भी कहते थे, "माँ नाम करो जीवन मधुमय हो जायगा, यह मत सोचना कि यह परकाल की वस्तु है, इस जीवन में भी उपभोग करने की वस्तु हुँ।" अब इन बातों की सार्थकता उपलब्धि कर रही हैं।

इस प्रकार गृह में रहकर, घर के काम काज करके अवसर समय में साधन करती थी। फिर क्रमशः इस अवस्था का परिवर्तन होने पर अकेली आत्मीय स्वजनों को छोड़ कर श्रीश्रीजगन्नाथ देव के श्रीक्षेत्र में बास करने आई। कई बर्ष बाद सन १३५६ साल में श्रीश्रीगोंसाई जी एकबार श्रीवृन्दावनधाम में ले गये, वहाँ जा कर दीक्षा के बाद प्रायः दीर्घ ३६ बर्ष बाद कृपा करके मेरी यह अबस्था खोल दी। यह क्या बस्तु है कल्पना नही की जा सकती, भाषा में उन सब रुप की बात उस आनन्द की बात प्रकाश नही की जा सकती, मेरी यह अबस्था साधना के वल से नही हुई है उन्होने ही कृपा करके यह अबस्था दी है।

वहाँ जाकर प्रातकाल के चार बजे से आठ नौ बजे तक शाम को प्रायः चार वजे से रात्रि के आठ वजे से नौ वजे तक आसन में बैठी रहती थी, कही जाना नही था, उस समय श्रीश्रीराधाकृष्ण की लीला दर्शन कराते थे, अन्य उपदेश देते थे और बातचीत होती, उन सब को लिखकर रखने को कहते थे। इस के बाद आज तक जहाँ कही रहूं प्रत्येक दिन लीला दर्शन और बातचीत होती है, उपदेश और अगर चिट्ठीपत्रों का उत्तर देना हो तो देते हैं। बाद में सबेरे अपना प्रातःकृत्य समाप्त कर उनलोगों को प्रणाम करके आसन में बैठती हूं उस समय जो कुछ लिखने का प्रयोजन है याद दिला देते हैं। जो कुछ लिखने को कहते है, उन सबको लिख रखती हूं।

मैं लिखना पढ़ना विशेष कुछ नही जानती, बंगला भाषा में ही एक प्रकार बर्णज्ञान नही है तथापि कठिन कठिन संस्कृत, स्तव, स्तोत्र, शास्त्र आलोचना इत्यादि सब लिख जाती हूं, कैसे लिखती हूं खुद ही नही समझ पाती आश्चर्य हो जाती हूं। उन सब लिखे हुये में से कुछ कुछ क्रमशः उनके आदेश से कई पुस्तकाकार में प्रकाशित हुये हैं।

इस बृद्धावस्था में जराजीर्ण देह में, आत्मीय स्वजन हीन अवस्था में अकेले इस धाम में रक्खा है। रोग में चिकित्सा और सेवा परिचर्या करने का अर्थ का अभाव होने पर अर्थ का व्यवस्था करना इत्यादि मेरी जब जो प्रयोजन सब कुछ की ही व्यवस्था वही कर रहे हैं। कुछ अभाव नही रक्खा। सर्व प्रकार की चिन्ता से दूर रख कर सर्वदा एक अपार आनन्द सागर में डुबा कर जीबन को मधुमय कर रक्खा हैं।

श्रीपुरुषोत्तमधाम
झूलन पूर्णिमा, १३६५

श्रीश्रीसद्‌गुरु की श्रीचरणाश्रित
माँ-मणि

श्रीश्रीसीतारामदास ओंकारनाथजी महाराज का पत्र

श्रीश्रीगुरुवे नमः

श्रीमन्दिर, नीलाचल आश्रम
चटक पर्वत
बंगला १६-१०-६४ साल

श्रीचरणकमलेषु—

माँ—पूज्यपाद श्रीश्रीगोंसाई जी ने आपको कहा माँ (मा-मणि) एक 'सार संग्रह माधुरिमा' चण्डीभबन की लड़की के साथ सीताराम के पास भेज देना प्रचार के लिये ।

यह संवाद सुनकर यथेष्ट आनन्दित हुआ । इस शुष्क कठिन कठोर प्रेमगन्धहीन अधम सीताराम के ऊपर जो उनकी कृपा दृष्टि पड़ी है । यह केवल उनकी अहेतुकि कृपा के सिवाय और कुछ नही, उनको कहियेगा क्या इस जीवन में किसी दिन कुछ क्षण के लिये उनका दर्शन, व एक बाक्य सुनने का मेरा भाग्य नही होगा !

'सार संग्रह माधुरिमा' पाठ कर मै धन्य हुआ ५ पुस्तक चण्डीभबन के माँ के हाथ से भेज दीजियेगा । हमारी पुस्तकों के साथ लड़के बिक्रय के लिये रक्खेंगे ।

प्रणाम
आपका सीताराम ।

परम पूजनीया

श्रीयुक्ता माँ-मणि

श्रीचरणकमलेषु—
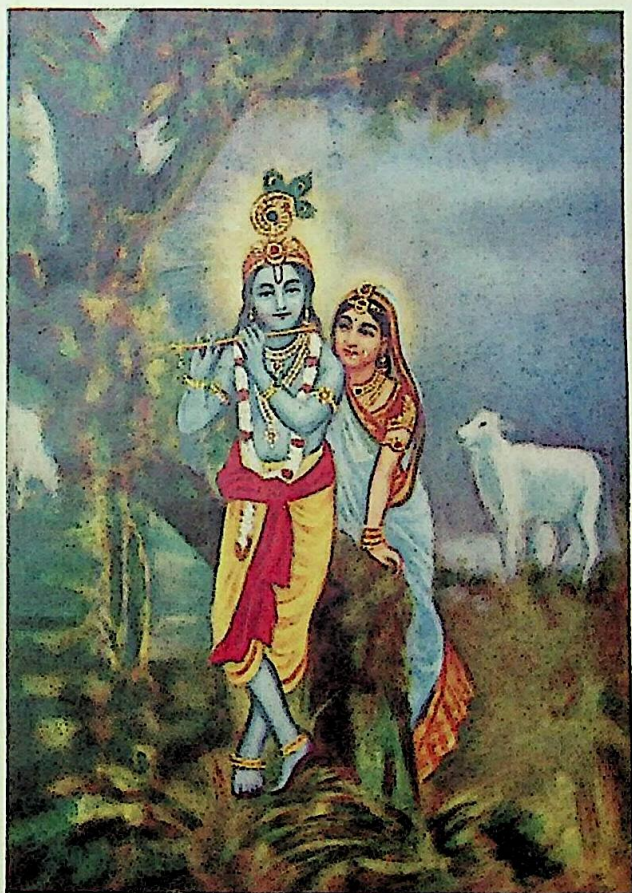
भूमिका

श्रीमत् विजयकृष्ण गोस्वामी प्रभु जी के शिष्य एवं जामाता स्वर्गीय जगबन्धु मैत्र महाशय जी के शिष्या श्रीमती सरोजिनी मित्र (जो माँ-मणि के नाम से परिचित है) साधारणतया श्रीक्षेत्र में बास करती हैं। वह (माँ मणि) गोस्वामीप्रभु, श्रीचैतन्यदेव, गोस्वामी प्रभु जी की सहधर्मिणी श्रीमती जोगमाया देवी प्रभृति का दर्शन प्राप्त करती हैं और उन लोगों की बातें भी सुन पाती हैं। उन लोगों ने जो कुछ उपदेश दिया है उन सब को संग्रहित करके माँ-मणिने पुस्तकें प्रकाश की हैं।

गोस्वामी प्रभु की अशेष कृपा से ही उन्होंने नित्यलीला दर्शन करने का अधिकार लाभ किया है। यह लीला दर्शन सद्गुरु की कृपा से ही सम्भव है। गोस्वामी प्रभु जब श्रीबृन्दाबन में वास करते थे—" उस समय एकदिन शिरोमणि महाशय ने गोस्वामी प्रभु से कहा—देखिये प्रभु, मैंने राधारानी की कृपा से अप्राकृत बृन्दाबन लीला दर्शन करने का अधिकार प्राप्त किया है। समय समय लीला रस सम्भोग भी करता हूं ; पर मालुम नहीं क्यों वह स्थायी नही होता। इसी दुख से रातदिन मेरा प्राण जलता रहता है। शास्त्र में है, सद्गुरु की शक्तिलाभ के विना श्रीबृन्दावन की मधुर लीला में प्रवेशाधिकार नही प्राप्त होता है। आपही

वहीं सद्गुरु के रूप में भाग्यवान जीव की कृपा करने के लिये अवतीर्ण हुये हैं, मै इस विषय में निःसंशय हूआ हूं। अतएव, प्रभु मुझे अव और न परीक्षा कीजिये।" * माँ-मणि परम सौभाग्यवती हैं सद्गुरु के प्रसाद से यह दुर्लभ साधन सम्पद लाभ करके धन्य हूई हैं।

किन्तु चित्त बिशेषरुपसे मार्जित न होने से इस साधनतत्व में बिश्वास नही होता। यह लीला दर्शन माधुर्य भावों के उपासकों की चरम अवस्था है। इस सम्बन्ध में गोस्वामीप्रभु ने लिखा है—"ऋषियों ने कहा है पहले ब्रह्मज्ञान (सर्वभूत में उनका प्रत्यक्ष अनुभव) द्वितीय अवस्था मे योग (आत्मामें और परमात्मा में प्रत्यक्ष योग) तृतीय भगवत् सन्बन्ध (पूजा अर्चना) इस अवस्था में उनका नानारूप और लीला दर्शन होता है। वह रुप सत्, चित्, आनन्द। वह रुप पंच भौतिक नही। रुप इसलिये कहलाता है, क्योंकि दूसरी अन्य भाषा नही हैं।" *

अनेक वैष्णव महात्माओं ने इस प्रकार लीला दर्शन करकें धन्य हुये हैं। अनेकों निरक्षर साधकों के जीवन में भगवत्-प्रसाद दुर्लभ शक्ति का आश्चर्य प्रकाश हुआ है। त्रैलंगस्वामी, भास्करानन्द, बामाक्षेपा—इसी प्रकार और अनेक महासाधकों के जीवन उसका उज्वल प्रमाण है। किसी किसी ने अमर कवित्व शक्ति लाभ की है—तुलसी दास, तुकाराम, मीरा रामप्रसाद एवं ओर अनेकों ने। किसी का ज्ञान जगत में अनन्य अवदान है—व्यास, बाल्मीकि, कपिल, पातञ्जल, सन्त ज्ञानेश्वर, शंकराचार्य रामानुज, बल्लभाचार्य, श्रीरुप, श्रीजीब प्रभृति।

---

* आचार्य बिजयकृष्ण गोस्वामी—श्रीअमृत लाल सेनगुप्त

* श्रीश्रीबिजय मंगल।

इस प्रकार असंख्य जीबनों का दृष्टान्त हमारे सामने है। तथापि इसमें कितनों ने विश्वास रख पाया है? मनुष्य मात्र में हीं बुद्धि के अन्दर सत्त्व, रज, तम—यहं तीन गुण हैं। तमोगुणके फल से ही बुद्धि में भ्रान्ति उत्पन्न होती है।

> अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
>
> सर्वाथान् बिपर्शतांश्च बृद्धिः सा पार्थ तामसी ॥
>
> गीता १८।३२

बुद्धि में तमोगुण की वृद्धि होने से अधर्म को ही धर्म ज्ञान होता है, सब कुछ विपरीत मालुम होता हैं। जड़शिक्षा के प्रभाब से सब इन्द्रिय चरितार्थता की वासना में जो मोहाक्रान्त, दाम्भिक, अहंकारी--सत्य और साधनपथ से जो बहुत दूर--वे ही महतभाव सम्पद को, दिव्यजीवन की साधना को विद्रुप, परिहास एवं अविश्वास करते हैं।

चित्त शुद्ध होने पर क्रमशः आध्यात्म राज्य की गभीरता में प्रवेश करने का अधिकार होता है। शास्त्र और महाजन वाक्य में बिश्वास उत्पन्न होता है। आसुरिक स्वभाब सम्पन्न आदमी प्रकृत गन्थ को जो मूल्य और मर्यादा देते हैं, शास्त्र और महाजन वाक्य को वैसी मर्यादा नही देते, यद्यापि शास्त्रबाक्क ही अभ्रान्त महापुरुषों के जीवन का उज्वल प्रमाण है। ऋषि यों का पथ अनुसरण करके कितने दीन अभाजन अख्यात व्यक्तियों ने अमरजीबन लाभ किया है।

उमाचरण बन्दोपाध्याय त्रैलंग स्वामी जी के एक बगांली शिष्य थे। उन्हेने लिखा है कि, "एकदिन उनके ही सन्मुख स्वामीजी के आह्वान से पाषाणमयी काली-प्रतिमा स्वयं पूजा की बेदी से उतर कर एक कुमारी बालिका की तरह···धीर पद में चलकर उनके पास आकर उपस्थित

हुई। अस्पष्ट दीपालोक में चैतन्यमयी की जड़ीय गति एवं रूपं की छटा देखकर मैं अतिशय भीत और चमकृत हुआ। मन में इच्छा हुई, कि प्रणाम करके एकवार माँ कह्के बुलाऊँ एवं मनमें सोचने लगा, निकट में गुरुदेव और सन्मुख में जगत्-माता—इस समय अगर मेरीं मृत्यु हो तो स्वर्गलाभ हो जाय! आनन्द और भय से अन्तःकरण की वात बाहर न निकली। मै जड़वत् रह गया—अचेतन पाषाण सचेतन हो गया, किन्तु मैं सचेतन होकर माँ अतेतन हो गया।—देखा पूर्व कां तरह सव ही ठीक है केवल जिह्वा वाहर नही है एवं पदतल में महादेव भी नही हैं। बाबाकी (त्रैलंग स्वामी की) अनुमति पाकर माँको प्रणाम और उनकी पदधूलि मस्तक में धारण करके और सर्वशरीर में लगाकर जीवन को पवित्र, जौर सार्थक ज्ञान किया। माँ के दोनों पैर, मनुष्य पदकी तरह नरम थे, मैंने खुव अच्छी तरह अनुभव किया, उसके बाद स्वामीजी ने मुझे कहा--'अच्छी तरह देखलो बाद में किसी प्रकार आक्षेप न करना पड़े'—कुछ देर बाद गुरुदेब ने माँ को निज आसन में जाने के लिये इशारा किवा। छोटी लड़की की तरह धीर पद में चलकर फिर अपने आसन में आकर पाषाणमयी हो कर बिराजमान हो गईं।"

बाद मे मैने जिज्ञासा किया "गुरुदेव, पाषाण किस प्रकार चल सकता है? जो कुछ मैने देखा वह तो बिलकुल असम्भव।"

उन्होने कहा—"तुम्हारा जड़देह किस प्रकार चलता है।" मैने कहा—"मनुष्य देह में आत्मा और चैतन है इसलिये चल और वोल सकता है।" इसपर उन्हने कहा—"सिद्ध साधक के गुण से जब मृत्तिका

में, पाषाण में व धातु में आत्मा और चेतन का संचार होता है—तब वह मूर्त्ति भी चल, बोल, सुन और काम कर सकती है। *

एकान्त भाव से सत्य को अवलम्बन करने से एवं शास्त्र वाक्य अनुसरण करके चलने से अन्तर का अन्धकार दूर हो जाता है—तब धर्म की महिमा उपलब्धि होती है और समस्त बिश्वास होता है।

उत्तरपाड़ा के अभिभाषण में श्री अरबिन्द ने कहा था—'इंगलेण्ड में बिजातीय भावधारा के अन्दर, सम्पूर्ण विजातीय वातावरण के अन्दर मै पला हूं। एक समय मेरे मन में होता था, कि हिन्दुधर्म में एसी अनेक चीजे हैं, जो केवल कल्पना विलास, मन में होता था कि उसके अन्दर ऐसी अनेक चीजे हैं जो केबल स्वप्न है, ऐसी अनेक चीजे हैं जो केवल भ्रान्ति और माया है। किन्तु अब मैं दिन पर दिन मन के अन्दर हृदय के अन्दर, शरीर के अन्दर हिन्दु धर्म की सत्यता उपलब्धि करने लगा। वह सब मेरे सामने जीवन्त अनुभूति होने लगा, मेरे सामने ऐसी चीजे उन्मुक्त हुई, जड़-विज्ञान जिसकी कोई व्याख्या ही नही कर सकता।

गोस्वामी प्रभु ने गेन्डेरिया आश्रम में अपने हाथ से लिख रक्खा है था—

'शास्त्र और महाजन बाक्य में बिश्वास करो, शास्त्र और महाजन बाक्य के साथ जो नही एक होगा, उसे बिष की तरह त्याग करो'।

सिद्धिलाभ करने का यह एक मात्र उपाय है। अनुशीलन के बिना कोई ज्ञान ही लाभ नही किया जा सकना। जड़ बिज्ञान के सम्पर्क में जानकारी करने के लिये—प्रणालीमत उस बिद्या की चर्चा करनी पड़ेगी।

---

* महात्मा त्रैलंगस्वमी जी का जीवन-चरित—उमाचरण बन्दोपाध्याय

उसीप्रकार पराज्ञान लाभ करने के लिये शास्त्र और महाजन बाक्य अनुसरण करके चलना ही कर्त्तब्य है। ऋषियों के व्यबस्था के अनुसार चलकर भी यदि आध्यात्मराज्य के रहस्य का द्वार उद्घाटित न हो तो—उसको अलीक, असत्य कहा जा सकत है।

श्री मति सरोजिनी मित्र (माँ मणि) ने सुदीर्घकाल गुरु निर्दिष्ट पथ पर कठोर साधना किया है। उनके लिये परलोकगत गुरु, महापुरुषो अबतारो का दर्शनलाभ एवं उनके साथ बाक्यालाप करना कुछ भी असम्भब नहीं। जो लोग यह सव अबिस्वास करते हैं वे हमारी बातें बिश्वास करेगें, इसकी सम्भावना कम हैं। पर याह बात निःसंशय कहा जा सकता है कि जो बिस्वास करेगें उनको कुछ मात्र ठगने की आशंका नही है। पर जो अबिस्वास करेंगे। वह अधिकतर बञ्चित होंगे।

१८ पूष १३६५ श्रीबसन्त कुमार चट्टोपाध्याय
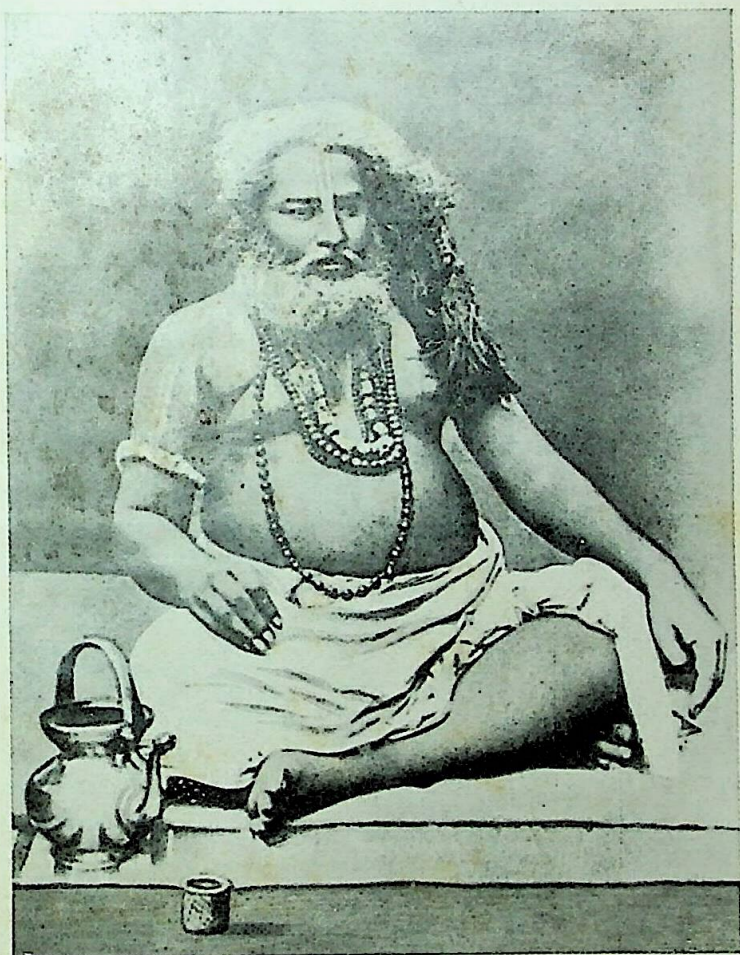
प्रभुपाद श्रीश्री ৺विजयकृष्ण गोस्वामीजीकी प्रतिकृति ।

श्रीश्रीगुरवे नमः

स्तोत्र

शृणु नारद वक्ष्यामि रहस्य श्रुति नदितम् ।
यन्न कस्यापि चाख्यातं सारात् सारं परात् परम् ।
श्रुत्वा परस्मै न वाचं यातऽतीव रहस्य कं ।
मूल प्रकृति रुपिन्याः संविदो जगदुद्भवे ॥
प्रादुर्भूतं शक्तियुग्मं प्राण बुद्ध्यधि दैवतम् ।
जीवानाश्चैव सर्वेषां नियन्तृ प्रेरकं सदा ॥
तदधीनं जगत् सर्वं विराढ़ादि चराचरम् ।
यावत्तयो प्रसादोन तावध्मोक्षोहि दुर्लभवं ॥
ततस्तयो प्रसादार्थे नितं सेवेत तद्वयम् ।
तर्तादौ राधिका मन्त्रं शृनु नारद भक्तितः ॥
ब्रह्मा विष्ण्यादि भिनित्यं सेवितोयं परात् परः ।
श्रीराधेति *चतुर्थ्यं वह्नेर्जायाततः परम् ॥

---

* एकदिन श्रीश्रीगोंसाई जी ने कहा—माँ, पहले एकदिन श्रीराधारानी जी का जो स्तोत्र सुना था और लिखा हुआ देखा था' देवर्षि नारद को नारायण ऋषि कह रहे थे। वह स्तोत्र लिख रक्खो। श्रीवृन्दावन लीला लिखने के समय प्रथम पृष्ठ में श्रीराधारानी जी का वह स्तोत्र लिख कर उसके बाद लीला दर्शन लिखना। देवी भागवत में वह स्तोत्र है। मैं—मेरे पास तो देवी भागवत नहीं है, कहाँ मिलेगी ? तब उन्होंने कहा—राधाकृष्णतत्त्व में भी वह स्तोत्र है।

षड़क्षरो महामन्त्र धर्माद्यर्थ प्रकाशकः ।
मायाबिजा दिकश्चायं वाञ्छा चिन्तामणि स्मृतः ।।
वक्तृ कोटी सहस्रै स्तु जिह्वा कोटि शतैरपि ।
एतन्मन्त्रस्य माहात्म्यं वर्णितुं नैव शक्यते ।।
जग्राह प्रथमे मन्त्रं श्रीकृष्ण भक्ति ततूपरः ।
उपदेशान्मुल देव्या गोलके रास मण्डले ।।
विष्णुस्तेनो पदिष्टन्तु तेन ब्रह्मा विराट् तथा ।
तेन धर्मस्तेन तं मन्त्र तेनाऽमृषिरीरितः ।।
ब्रह्माद्यः सकला देवा नित्यं ध्यायन्ति तां मुदा ।
कृष्णार्चायां नाधिकारो यत राधार्चनं बिना ।।
बैष्णवे सकले तस्मात् कर्त्तव्यं राधिकार्चनम् ।
कृष्ण प्राणाधि देवी सा तदधीनो विभूर्यतः ।।
रासेश्वरी तस्य नित्यं तयाहीनो न तिष्ठति ।

श्रीमद्देवी भागवत

९-५०-५१७

मेरी बहुत दिनों की पुरानी एक किताबों की सन्दूक से राधाकृष्णतत्त्व नाम की वह पुस्तक ढूंढ़ निकाली और उसमें से देख कर उस स्तोत्र को लिख लिया ।
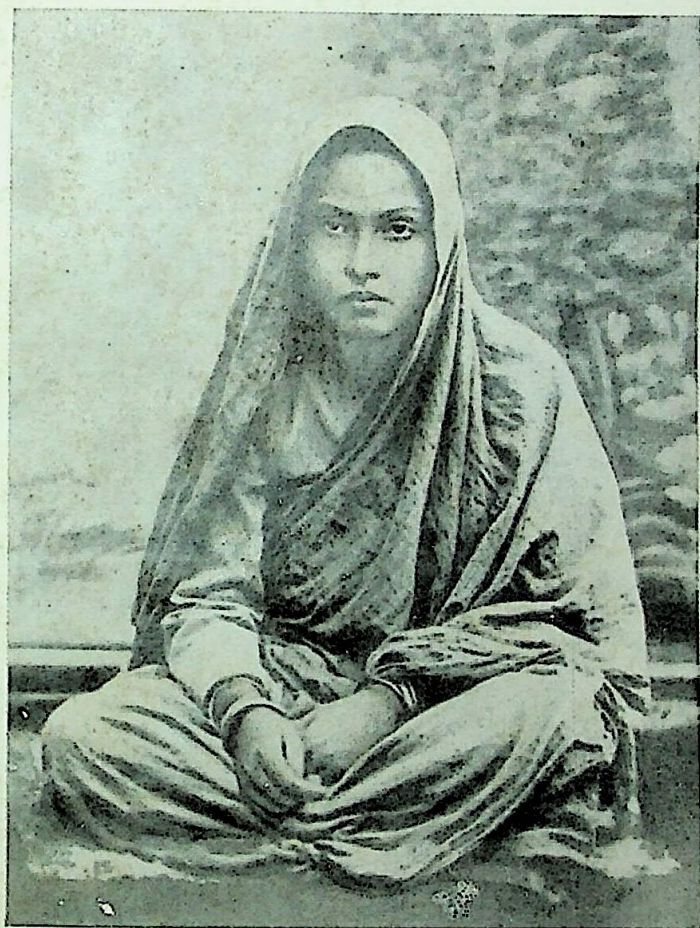
श्रीश्री॰माताठाकुरानीजीकी प्रतिकृति ।

श्रीश्रीवृन्दावन लीला

श्रीश्रीगुरवे नमः

प्रेमभक्ति प्रदातारं आनन्दानन्द वर्धनम् ।
स्वर्णमयी सुतं वन्दे योगमाया मनोहरम् ।।
बिजय-वल्लभां देवीं विजयानन्द वर्धिनीम् ।
सदानन्द-मयीं साध्वीं योगमायां नमाम्यहम् ।।

१८ भाद्र

अनुमान रात्रि के तीन वजे होंगे । ठीक समझ में नहीं आ रहा है । आसन में वैठ कर थोड़ी थोड़ी नींद में देख रही हूं, बहुत सी व्रज मायी खड़ी हैं । उन व्रजमाईयों को अच्छी तरह से देखने के पूर्व ही वैसी अवस्था फिर न रही । सुवह से खूब आनन्द हो रहा है । दिन के नौ बजे नाम की कृपा मिली, उसी में लीन हो गई । उसी अवस्था में सब दर्शन किया । व्रजबालकें आकर कह रहे हैं, गोपाल को हमारे साथ दो उसे गोष्ठ में ले जाये गे ।

मैं—आज सुवह से गोपाल ने केवल थोड़ा सा शरवत पिया है, और कुछ भी नहीं खाया कैसे तुम्हारे साथ उसे भेज दें । तब उन लोगोंने कहा यशोदा माता ने हमारे आंचल में नवनी बाँध दी है, हम तुम्हारे गोपाल को खिलायेंगे । गोपाल भी मेरे गले को पकड़ कर माँ "मैं जाऊँ" कह कर हट करने लगा । तव वे व्रजबालक गोपाल को-लेकर चले

गये। वह अवस्था चले जाने के बाद मैंने देखा कि मैं आसन में बैठी हूँ और नाम कर रही हूं।

१६ भाद्र

दिन के सात या आठ बजे होंगे। आसन में बैठ कर नाम जपते जपते देख रही हूं। नौ दस साल की बारह तेरह लड़कियाँ बाल खोले यमुना के पानी में खड़ी हैं। मेरी तरफ पीठ करके खड़ी होनेके कारण मैं उनके मुख को न देख सकी। तुरन्त ही वह घोर कट गया, और कुछ भी दिखाई नही दिया। ठाकुर जी ने मुझे क्या आनन्द में रक्खा है, उनकी कृपा ही मेरी एकमात्र भरोसा है।

२० भाद्र

सुवह के समय अन्दाज सात बजे होंगे। आसन में बैठ कर नाम करते करते तन्द्राच्छन्न अवस्था में देख रही हूं दश बारह व्रजगोपियाँ पीतल की गगरियों को यमुना के किनारे रख कर घूम रही हैं। छाया की तरह दर्शन किया। उसके बाद देखा श्रीश्रीगोंसाई जी* और श्रीश्री माताठाकुरानी* योगमाया देवी बैठे हैं, और श्रीश्रीगुरुदेव* खड़े हैं। एक सात आठ सालका साँवला लड़का, खूब सुन्दर देखने में, पीले रंग का वस्त्र पहने, सिर में मुकुट, हाथ में एक बंसरी। मेरे पास आकर

---

*१। श्रीश्रीगोंसाईजी—प्रभुपाद श्रीश्रीँ विजयकृष्ण गोस्वामी।
*२। श्रीश्रीमाता ठाकुराणी—गोस्वामी प्रभुकी सहधर्मिनी श्रीश्रीँ योगमाया देवी।
*३। श्रीश्रीगुरुदेव—श्रीश्रीँ जगबन्धु गोस्वामी प्रभुके शिष्य व जामाता

खड़ा हुआ मेरी तरफ देख कर मुस्कराने लगा। मैंने उससे पुछा, यहाँ एक मुठ्ठी प्रसाद पाकर रह सकूगीं? वह लड़का खूव उत्साह के साथ कहने लगा, जरूर मिलेगा, जरूर मिलेगा* (उस सुन्दर लड़के को देखने के वाद, फिर उसे देखने की इच्छा होने लगी)।

२१ भाद्र

तड़के पांच बजे, आसन में बैठने के कुछ देर बाद थोड़ी थोड़ी नीद में देखा, एक खूव बड़ा ठाकुर जी का दल्हान! उस कमरे में श्रीश्रीगोंसाई जी और श्रीश्रीमाता ठाकुरानी बैठे है, वहाँ पूजा करने की समस्त सामग्री सजाई हुई रक्खी है। वहुत सी व्रजमांई सिर में गगरी ले कर नृत्य करते करते यमुमा में जा रही है। फिर देख रही हूँ मेरा छोटा गोपाल आकर कह रहा है, मां यशोदा के पास नवनी (मक्खन) खाकर आया हूँ फिर मैंने देखा पीले रंग का बाघ छाल पहने महादेव खड़े है। गोंसाई ज़ी ने कहा इन्होंने ही गोपीवेश में रास में नृत्य किया था। उसके वाद देखा एक कमरे में श्रीश्री गुरुदेव वैठे हैं। वैसी ही सौम्यमुर्त्ती में। मैंने दो गुलाव के फूल लेकर उनके चरणों में दिये। उन्होंने क्या कहा मेरी समझ में नही आया।

---

*दोपहर के समय श्रीगोविन्द जी के पूजारी ने आकर मुझसे पूछा, आप क्या गोविन्द जी का प्रसाद रक्खेंगी? मैंने पांच रोटी और कुछ दाल और सब्जी रख लिया। जितने दिन मैं वृन्दावन में थी प्रतिदिन वही रोटी दाल, और सब्जी से प्रसाद पाती थी। और किसी दिन भी मुझे रसोई नहीं वनानी पढ़ी।

२२ भाद्र

सवेरे—आसन में बैठी हूँ। देख रही हूँ गोपाल को गोद में लेकर मा यशोदा बैठी हैं, और गोपाल को प्यार कर रहीं हैं। सन्ध्या में—आसन में बैठ कर नाम जपते जपते देख रही हूँ श्रीमति राधारानी वहुत सी सखियों के साथ अभिसार में जा रही हैं। अपूर्व उज्वल मूर्त्ती। लहंगा पहने, सिर पर दुपट्टा डाले, फूलों के जेवर पहने, हँस रही है, सब एक ही उम्र की हैं। मैंने व्याकुल होकर कृपा पाने के लिये प्रार्थना की। उन्होंने मुझे आशीर्वाद किया, और फिर चली गईं।

२३ भाद्र

सवेरे—आसन में बैठने के बाद देख रही हूँ, एक बड़ा कुञ्जवन। गोंसाई जी और माताठाकुरानी दोनों का वड़ा फोटो रक्खा हुआ हैं। एक राधा और कृष्ण जी की तसवीर रक्खी हुई है। देखते देखते गोंसाई जी और माताठाकुरानी राधा-कृष्ण के साथ मिल कर एक हो गये। और मैं एक बार गोंसाई जी और माताठाकुराणी को और एक बार राधा और कृष्ण को दर्शन करने लगी। इसी समय दो फूल के माला और कुछ फूल लाकर उनके चरणों में दिये और माला उन्हें पहना कर साष्टांग प्रणाम किया।

२४ भाद्र

सवेरे—आसन में बैठने के कुछ देर वाद देख रही हूँ कि मैं व्रजमाईयों के गांव में गई हूं। एक व्रजमाई को मैंने कहा मेरे सिरपर अपने पर की धूल दीजिये। कृपा करके उन्होंने पदधूलि दी। उन सव को प्रणाम करके कृपा भिक्षा माँगी। तव उन्होंने कहा आजकल यह चीज

कोई नही चाहता है जो इस भाव से माँगता है वह पा जाता है। खूब आनन्द हो रहा है कह रही हूँ जितने दिन यहाँ रहूंगी मेरा गोपाल आकर नवनी खा जायगा। उन्होंने कहा हमारे गोपाल के साथ तुम्हारा गोपाल भी नवनी खा जायगा। व्रजमाइयों का क्या मधुर भाव। श्रीश्री सद्गुरु की कृपा में जीवन धन्य हो गया।

शामको—असन में बैठने के कुछ देर बाद लीला दर्शन आरम्भ हुई—श्रीराधारानी श्रीकृष्ण दर्शन करने के लिये जा रही हैं। साथ में सखियां हैं। आनन्द में सब नृत्य करते करते करते जा रही हैं। बन में जाकर सखियों ने बहुत फूल तोड़ कर माला बनाई। श्री राधारानी और श्रीकृष्ण को फूल से सजा कर दो फूल के सिंहासन में दोनों को बैठाया। फूलों का खाट, फूलों का विस्तरा। बड़े बड़े फूलों के गजरों से सजा हुआ। क्या सुन्दर और अपूर्व शोभा। वर्णन करना मेरी साध्यके बाहर। घृतपूर्ण सोने का प्रदीप जलाये गये हैं। सखियां घूम घूम कर नृत्य कर रही हैं। राधा कृष्ण ने शय्या में शयन किया। कोई कोई सखि फूल का पंखा झलने लगी। मन्दिर वन्द हो गया मेरी वह भाव फिर न रही। श्रीश्री सद्गुरु की कृपा से आज मैंने राधाकृष्ण की नृत्यलीला दर्शन की।

२५ भाद्र

प्रातःकाल में—आसन में बैठने के कुछ देर बाद दर्शन मिली। एक व्रजमाई कह रही हैं, खूब भजन करो सब मिल जायगा। उन्होंने मेरे हाथ में माधुकरी दिया। फिर कहा, निर्जन में भजन कर राधारानी का कृपा मिलेगा। व्रजमाई स्थूलांगिनी थी। लहंगा पहने, सिर पर दुपट्टा गौर वर्णा। उम्र करीव पंचास।

२६ भाद्र

शाम को—आसन में बैठ कर नाम कर रही हूं। लीला दर्शन मिली। पहले श्रीकृष्ण और बलराम गोप बालकों के साथ गोष्ठ से आ रहे हैं। गाय और बछड़े आगे आगे आ रहे हैं। वे पीछे हैं। कृष्ण और बलराम अलका तिलक से सजे हुये हैं। बलराम के हाथ में सिंगा है। श्रीकृष्ण के हाथ में वंसरी है। उसके बाद श्रीश्रीजगन्नाथ बलराम, सुभद्रा को सामने देखा। बाद में मणि कोठा में देखा। फिर देखा गोसाईं जी, माताठाकुराणी, गुरुदेव और बहुत से महापुरुष वहां है। सबको पहचान न सकी। सब भागवत की आलोचना कर रहे हैं।

२७ भाद्र

सवेरे—आसन में बैठने के बाद देख रही हूं गेरुआ अलखल्ला पहने दो तीन आदमी बाऊल की तरह बड़े बड़े करताल लेकर कीर्त्तन करते करते जा रहे है।

२८ भाद्र

सवेरे—आसन में बैठने के बाद देख रही हूं। एक कुञ्ज में राधारानी और सखियों ने श्रीकृष्ण जी के आंख को बांध कर उनके साथ आंख मिचौनी खेल रही हैं। खूब दौड़ रहे हैं। श्रीकृष्ण तो पकड़ न सके अन्त में हैरान होकर बैठ गये। तब साथियों ने आकर उनकी आंखे खोल दी। राधारानी को बाईं ओर बैठा कर फूलों से सजाया। क्या सुन्दर शोभा थी। मेरे पास वर्णन करने की शक्ति कहाँ? बहुत देर तक वह युगल मिलन देखने का सौभाग्य हुआ। उसके बाद राधारानी और उनकी सहेलियाँ गगरी लेकर यमुना में पानी लेने चली गईं।

२९ भाद्र

सुबह—आसन में वैठी हूं—देखरही हूं मा यशोदा श्रीकृष्ण और बलराम को गोष्ठ में जाने के वेश में अलका और तिलक करके सजा दे रही हैं। वहाँ मेरा गोपाल भी माँ यशोदा के पास जाकर खड़ा है। मा यशोदा ने नवनी खाने को दिया। क्या अपूर्व दृश्य था। जीवन धन्य होने लगा एक वात से आश्चर्य लगने लगा कुछ समझ में न आया वह यह कि श्रीकृष्ण जी जव राधारानी के साथ लीला करते हैं तव मैं उनकी किशोर अवस्था देखती हूं और फिर जव वह माँ यशोदा के पास रहते हैं तव उनकी बालकमूर्त्ती हो जाती है। माँ के पास खूव हठ कर रहे हैं।

३० भाद्र

सवेरे—आसन में वैठने के बहुत देर बाद लीला दर्शन हुई। श्रीराधारानी सखियों के साथ सूर्य्य उपासना करने के लिये बन में जा रही हैं। क्या अपूर्व वेश। लहगां पहने। रंगीन ओढ़ना। पैरो में महावर लगाये। लाल दो पैर और उनमे फूल चित्रित थे। अभी वह देवदुर्लभ चरण मानस चक्षु के सामने दिखाई दे रहे हैं। हाथ में फूलों से भरी थाली सब नाचते नाचते जा रही हैं। वहाँ कमल के फूलों से भरी हुई एक टोकरी थी। गौंसाई जी और माताठाकुरानी दोनों आसन में बठे हैं। और एक तरफ गुरुदेव और माँ जननी खड़े हैं। श्रीराधारानी श्रीकृष्ण के बाँई ओर खड़ी हैं। सखियों ने मुझे कहा, यह फूल सबके चरणों मे दो मैं आनन्दित हो कर वह कमल के फूल लेकर सबके चरणों में देने लगी। उन्होने कहा आज से सेवा करने का अधिकार मिला। गौंसाई जी माताठाकुरानी,

गुरुदेब और माँ जननी* श्रीराधाकृष्ण, उन सब लोगों का मिलन देख कर धन्य हो गई। जो कुछ देखा लिखने की क्षमता नही है। तन्मय हो कर देखने लगी। उन्होने कहा फिर देखोगी।

शाम को—आसन में बैठने के बहुत देर बाद देखा, गेरुआ आलखल्ला पहने सिर के बाल चूड़ा की तरह बधाँ हुआ है मुझे साथ में लेकर ऊर्ध में उठगये वहाँ जाकर देख रही हूं बहुत से साधु, मुनि ऋषि बैठ कर ध्यान कर रहे हैं। उन्होने कहा यह तपलोक है। यहाँ कोई नही आ सकता। गोंसाइ जी ने कृपा कर के तुम्हें दिखाने के लिये आदेश दिया है। मैंने देखा पर, सुबह लीला दर्शन करने के बाद से मन आनन्द में भरपूर है, और कुछ देखने का आग्रह नही है।

३१ भाद्र

सवेरे—आसन में बैठे नाम कर रही हूं कुछ देर बाद लीला दर्शन किया। साथियों ने मुझे कहा चलो आज गोबर्धन में उत्सव है। उनके साथ गई। वहाँ जाकर देख रही हूं खुब बिराट आयोजन। कितना भोग सजा हुआ है। पूड़ी, मालपूआ, बूँदी के लड्डु बड़े बड़े। बड़ी बड़ी थालियों में दिया हुआ है। गोंसाई जी, माताठाकुरानी, गुरुदेब और माँ जननी वहाँ हैं। और अनेक ब्रजमाँई वहाँ हैं। गोबर्धन की पूजा हुई। मैंने सब को प्रणाम किया वहीं पर माताठाकुरानी को प्रणाम करके कृपा भिक्षा माँगी। खूब स्नेह से मेरे सिर पर हाथ फेर कर मुझे प्यार किया। मेरे हाथ को

---

*मा जननी—श्रीश्रीउँशान्तिसुधा देवी। श्रीश्रीगुरुदेवेकी सहधर्मिनी गोस्वामी प्रभुकी कन्या और शिष्या।

लेकर एक सखि के हाथ में देकर कहा, इसको देखना। तुम्हारे हाथ में दिया। उस अबस्था में मुझे इतना असीम आनन्द मिला, वह मैं कैसे कहुँ मैने माताठाकुरानी से कहा.........उसको भी आशीर्बाद कीजिये। तब उन्होने धीरे धीरे कहा......उसको शान्ति लाभ हो। माताठाकुरानी जी का वह पवित्र, स्नेहपूर्ण ज्योतिर्म्मय मुह देखकर मेरे प्राण के अन्दर आनन्द की लहर प्रबाहित होने लगी। ......उसको आशीर्बाद किया। उसमें भी मुझे आनन्द मिला। मालपूआ प्रसाद दिया।

शामको—आसन में बैठी हूँ। वह गेरुआ आलखल्ला पहने। सिर के बाल चूड़ा की तरह बांधे है उस पर एक हरिनाम की माला लिपटी है। मुझे लेकर ऊँचे उठगये। एक स्थान में जाकर उन्होने कहा, यह ब्रह्मलोक है। वहां जाकर मैंने देखा सब मुनियों की मूर्त्ति उज्वल है। एक एक अग्निकुण्ड में हवन कर रहे है। और सुर ओर तान योग करके वेद पाठ कर रहें। धूप धूना हवन की सुगन्ध से एक पवित्र और सात्विक भाब पैदा हुई है। समस्त स्थान की अत्यन्त रौनक हो रही है। क्या मैंने देखा वह प्रकाश करने की क्षमता मुझ में नहीं है। तब मैंने साधुबाबा को कहा —मुझे मानाठाकुरानी के पास ले चलिये। यह सब अपूर्व ज्यातिर्म्मय मुख देख कर मैं स्तब्ध हो जा रही हूं। तब उन्होने हँस कर कहा। माँ गुरु की कृपा से तुम्हें यह शक्ति मिली है। नही तो अबतक मोह प्राप्त हो जाती

एक मात्र सदगुरु की कृपा के बिना यह सब दर्शन दुर्लभ है। तुम सौभाग्यवती हो। तुम्हारे ऊपर गोंसाईजी की अपार करुणा हैं। फिर मुझे गोंसाईजी और माताठाकुरानी के पास दे गये। उनको मैंने कहा, आप कौन हैं। अनुग्रह करके मुझे बताइयें उन्होने कहा मेरा परिचय बाद मे

बताऊँगा। उसके बाद मैंने गोंसाईंजी और माताठाकुरानी को प्र णाम किया। उन्होने आशीर्बाद किया।

१ आश्विन

सवेरे—आसन में वैठ कर नाम कर रही हूं। कुछ देर बाद गुरुदेब को दर्शन किया। मैंने कहा आज लीला दर्शन नही हुआ। उन्होने कहा माँ नाम करो सब होगा। फिर मैंने कहा—यहाँ क्या है? उन्होने कहा, है, देखोगी? मैं—यदि आपकी इच्छा हो तो दिखाइयेगा, गुरुदेव ने कहा देख सकोगी, पर आसक्ति रहते दर्शन नही मिलता।

शामको—आसन में बैठने के बाद फिर वही साधुबाबा गेरुआ अल्खल्ला पहने आये और मुझे ले गये। एक खूब बड़ा सफेद पहाड़। उसके ऊपर शिवलिङ्ग आकार का एक बिराट मन्दिर। हम लोगों के जाते ही बाबा नन्दीकेश्वर ने द्वार खोल दिया साधुबाबा ने कहा यह कैलास पर्वत है। यहाँ शिबदुर्गा जी का अपूर्व मिलन देखा। भोलानाथ बाघ की खाल (व्याघ्रचर्म) पहने हुये हैं। सिर की जटा में साँप लिपटे हैं। हाथ में त्रिसूल हैं। बाँई गोद में भवानी राजरानी रूप में वैठी हैं। मैंने प्रणाम किया। उन्होने सिर में हाथ रख कर आशीर्बाद किया। उसके बाद माँ अन्नपूर्णा ने मेरे हाथ में कुछ अन्न देकर खाने को कहा। मैं—आज तो एकादशी हैं।

तब माँ ने मधुर हँसी हँस कर कहा, यह महाप्रसाद हैं। तब मैंने वह महाप्रसाद पाया। और खूब आनन्द हुआ आने के समय मैंने बाबा नन्दीकेश्वर को प्रणाम किया। आशीर्बाद किया मंगल हो। दरवाजा बन्द हो गया।

२ आश्विन

सवेरे—आसन में बैठने के बाद दर्शन किया। सखियाँ स्नान करने जा रही है। मैं भी साथ में गई। मैंने तब झारा के पानी से सब के चरण धोये। वह देवदुर्लभ पादोदक पी लिया। क्या सुगन्धि थी। प्राण ठण्डा हो गया। श्रीकृष्ण कदम्ब के वृक्ष के नीचे बँसरी लेकर खड़े हैं। सखियों ने राधारानी को कृष्ण जी के बाँई ओर खड़ा कर दिया। दोनों लिपटकर एक हो गये। क्या मधुर दृश्य यह अपूर्व मिलन तन्मय हो कर देख रही थी। क्रमशः सब ओझल हो गया। ज्योतिर्मय रुप में श्रीगुरुदेव खड़े हैं। वहीं पर गोपिवेश में उज्वल मूर्त्ति में...... खड़े हैं। फिर गुरुदेव भी......अदृश्य हो गये। कोई बात नहीं हुई।

शामको—आसन में बैठी हूँ। फिर वही अलखल्ला पहने हुये साधुबाबा आकर मुझे ले गये। एक जगह में जाकर उन्होंने कहा, इस मानस सरोबर की शोभा धारना के अतीत है। प्रकाण्ड कमल का फूल पानी में खिला हुआ है। बड़े बड़े सफेद सफेद राजहँस बिचरण कर रहे हैं। सरोबर के किनारे बड़े बड़े पेड़ो पर सफ़ेद सफेद फूलों के गुच्छे खिले हुये हैं। स्थान सुगन्ध से भर गया है। तरह तरह के फलों के बृक्ष। फलों से लदे हुये है। उन सब फलों के नाम नहीं जानती। नाना भाँति के फूल भी खिले हुये है। मुनि-ऋषि स्नान कर रहे हैं। मुझे उस सरोबर का पानी लेकर सिर में देनें को कहा। मैंने प्रणाम करके सरोबर में उतर कर वह पानी सिर में दिया। श्रीश्री सद्गुरु की कृपा से मानस सरोबर का पानी स्पर्श करके जीवन धन्य हो गया। क्या देख रही हूँ, क्या लिखूँ। लिख कर बताने की शक्ति मेरे में नही है।

३ आश्विन

सवेरे—आसन में बैठ कर नाम कर रही हूँ। बहुत देर बाद देख रही हूँ बन में श्रीकृष्ण बलराम और उनके बहुत से सखा हैं। थालीयों में करके अन्न, दाल लेकर ऋषि पत्नियाँ आई। तब मैंने देखा गोंसाईजी, माता-ठाकुरानी, गुरुदेव, माँ जननी, श्रीमती राधारानी और सब सखियाँ वहाँ हैं। वह अन्न और दाल सब ने खाया। माताठाकुरानी ने दाल और अन्न मिलाकर एक लड्डू की तरह बनाकर मेरे हाथ में दिया। मैंने प्रसाद कर देने को कहा। उन्होने दाँतसे थोड़ा काट कर प्रसाद बना दिया। वह महाप्रसाद खाकर अत्यन्त आनन्द हुआ। फिर गोंसाईजी, गुरुजी, माँ जननी सब ने खा खा कर प्रसाद बनाकर मेरे हाथ में दिया। इतने में गोपाल ने आकर प्रसाद खिला दिया तो वह स्थान आनन्द बाजार हो गया। फिर देखा सखीबेश में एक टोकरी करके बहुत फूल लेकर आई। मैंने वह फूल लेकर गोंसाईजी, माताठाकुरानी, गुरुदेव, माँ जननी सब के चरणों में दे रही हूँ। इतने में दादाजी ने आकर कहा—देख कर धन्य हो गया। तब गुरुदेव ने उनके पैर में फूल देने के लिये कहा मैं जेसे ही उनके पैरों में फूल देने गई दौड़ कर भागने लगे। तब यह देख कर सब खूब हँसने लगे। वे आनन्द में नृत्य करने लगे। वह आनन्द का मेला देखकर मैं धन्य हो गई। खूब नाम की कृपा होने लगी।

४ आश्विन

सवेरे—आसन में बैठ कर नाम कर रही हूं। गोंसाई जी माता-ठाकुरानी, बाबा विश्वनाथ, माँ अन्नपूर्णा को देखा। माँ अन्नपूर्णा ने मेरे हाथ में महाप्रसाद दिया (सादा अन्न) कुछ खाया। कुछ आँचल में बाँध

रक्खा। गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। गुरुदेव और माँ जननी आये। माँ यशोदा गोपाल को नवनी खिला रही हैं। राधारानी और सखियाँ हैं। वहाँ मुझे दिखाकर एक सखिने दूसरे सखि से पूछा इनके दीक्षा मिली है? तव उस सखिने कहा ललिता के पास मिली है। आनन्दित होकर उन सव ने मुझे आशीर्वाद किया (कल गोविन्द जी के मन्दिर दर्शन करने के लिये गई थी। भीड़ में देख कर मैं तृप्त नही हुई। आज मन में हो रहा है श्रीगोविन्द जी अगर अपनी भुवनमोहन रूप में दिखाई दें मेरे हृदय के अन्दर प्रेममयी राधारानी को अपनी बाँई ओर लेकर) तब मैंने देखा श्रीगोविन्द जी अपनी बाँई ओर राधारानी को लेकर मेरे हृदय पट पर प्रस्फुटित (खिल) हो उठे। वह अपूर्व मनमुग्धकारी दृश्य देख कर मुग्ध हो गई। फिर—आकर कहा, तुम यहाँ आई हो खूब आनन्द करो। हमलोग इस नित्यानन्द में डूवे हैं। देवर्षि नारद ने आकर सबको प्रणाम किया और आनन्द में हरिध्वनि करने लगे। मैंने उनको प्रणाम किया उन्होंने कहा माँ सद्गुरु की कृपा में जीवन धन्य हो जायगा। सब समय नामानन्द में डूब रहो। गोविन्द जी और राधारानी बैठे हैं। लाल चरण, गोविन्द जी के चरणों में पतानही काहेका दाग है। तब याद आया वह दाग ब्रजांकुश चिह्न हैं। अपने को भूल गई और लीन होकर देखने लगी। मैंने कहा, आप दोनों वंसरी पकड़ कर एकबार वंसीध्वनि करिये। एक सखी ने कहा अभी श्रीवृन्दावन के प्रेम रसमें डूब जा रही हो। वंशरी सुनने से उन्मादिनी होकर दौड़ोगी। भजन टूट जायगा। यह प्रेम जब गाढ़ा होगा हृदय में रखने की शक्ति मिलेगी तब वंसंरी सुन पाओगी। अभी नाम रस में डूव कर लीला दर्शन करो, सद्गुरु की कृपा में सब कुछ होगा उसके बाद गोंसाई जी, माताठाकुरानी, राधाकृष्ण सब एक साथ होकर मिल गये।

शामको—आसन में बैठी हूं। गोंसाई जी खड़े हैं। इतने में वही अलखल्ला पहने साधु बाबा आये। गोंसाई जी ने उनको कहा इसे पितृलोक में ले जाओ। उनके साथ में पितृलोक में जाकर देख रही हूं कई साधु बैठे हैं। कोई पाठ कर रहे हैं। कोई जप कर रहे हैं। कोई ध्यान कर रहे हैं। सब कोई सफेद कपड़े पहने हुये है। सफेद चादर ओढ़े। शान्त भाव। उनके बीच में मेरे परलोकगत पूर्वपुरुषो में से एक जन को देखा। मुझे देख कर उन्होंने खूब आनन्द किया, मैंने प्रणाम किया, आशीर्वाद करके कहा—मेरे बंश में जन्मग्रहण करके चौदह पुरुष को उद्धार किया है। तुम कल अपने हाथ में यमुना का पानी हम लोगों को देना।

५ आश्विन (महाल्या) पितरविदा

सवेरे आसन में बैठकर यमुना का पानी लेकर पितृपुरुषों के उद्देश्य में पानी दिया। मैंने देखा मेरे हाथ के ऊपर वहुत से हाथ बिछे है। मैं तो मन्त्र तन्त्र कुछ नहीं जानती। निज इष्ट मन्त्र लेकर जितना ही पानी दे रही हूं उतना ही मेरे हाथ पर हाथ बिछे देख रही हूं। मैं कुछ भी न समझी। कुछ देर बाद नाम करने बैठी—देखा सखियाँ आ कर कह रही है, चलो यमुना में चलो। मैं उनके साथ में गई। यमुना तीर में एक स्थान में बहुत फूल है, एक सखी ने मुझे वह फूल लेकर यमुना माई की पूजा करने को कहा। तब मैंने देखा पानी पर ज्योतिर्मयी मातृमूर्त्ति। सारे अङ्ग में अलङ्कार चमक रहे है; सिर में सोने का मुकुट; पानी में कमल के फूल के ऊपर बैठी है। सखियों ने उलुध्वनि किया! मैंने उनको पूजा करके परणाम किया। उसके बाद सब अदृश्य हो गया।

यमुना के तीर तमाल वृक्ष के नीचे श्रीमती राधारानी और श्रीकृष्ण खड़े हैं। माता ठाकुरानी और गोंसाई जी भी खड़े हैं। उनका अपूर्व मिलन देखकर धन्य हो गई। वे सब एक हो गये। आनन्द में मेरा प्राण पूर्ण हो गया।

६ आश्विन

सवेरे आसन में बैठ कर नाम कर रही हूं बहुत देर बाद लीला दर्शन मिली। यमुना के किनारे एक कुञ्ज में राधारानी, सब सखियाँ हैं। इतने में श्रीकृष्ण जी वंशीध्वनी करते करते आये। बड़े बड़े फूलों के माला चरणों तक लटक रहे हैं। वह स्थान फूल पत्तियों से सजी है। सखियों ने राधारानी को श्रीकृष्णके बाईं ओर खड़ा कर दिया। दोनों ने ही बंसरी पकड़ी है। राधारानी दक्षिण की तरफ झुककर श्रीकृष्ण को पकड़े हैं। सखियाँ फूल फेंक रही हैं। मैंने कुछ फूल लेकर उनके चरणों में दिया। देखा श्रीकृष्ण के दाहिनी ओर गोंसाइ जी खड़े हैं। और राधारानी के बाईं ओर माताठाकुरानी खड़ी हैं। सखियाँ उनको घिर कर नृत्य कर रही हैं। मुण्डित मस्तक, कमडंल हाथ में, क्या सुन्दर! ज्योतिर्मय मूर्त्ति प्रेम के ठाकुर श्रीकृष्ण चैतन्य देख रहे हैं। फिर नुपुरध्वनि करके नृत्य करते करते नित्यानन्द प्रभु आये। क्या सुन्दर अपूर्व मूर्त्ति! यह सब जो श्रीश्रीगोंसाईं जी दया करके दिखा रहे हैं, लिखकर बतलाना असम्भव है। ऐसी कोई भाषा मैं नही जानती जिससे यह लीला लिखकर व कहकर प्रकाश कर सकूँ। यह दर्शन केवल एक मात्र सद्‌गुरु की कृपा से हो रही है। वहाँ सब प्रेम में ममतवारा। प्रेम की बाढ़ में मैं बह रही हूं। सद्‌गुरु की कृपा में यह व्रजलीला दर्शन लाख लाख जन्मों के सुकर्म के फलस्वरुप है। ठाकुरजी के पास यह प्रार्थना है कि इस अवस्था से बञ्चित

न हो जाऊँ। प्राण आनन्द से भरपूर। इस आनन्द की कोई तुलना नही है। महाप्रभु और नित्यानन्द प्रभु को प्रणाम किया। फिर माताठाकुरानी से पूछा यह जो महाप्रभुदत्त प्रेम-भक्ति यह सबको क्यों नही मिलता? तब माताठाकुरानी ने मधुर सुरमे कहा, स्थूल के उपर ही सब का लक्ष्य है, सूक्ष्म चीज कोई नही सोचता, इसलिये यह माधुर्य नही मिलता ऊपर देख कर ही सब सन्तुष्ट हैं भीतर कोई नही देखता।* सब ओझल हो गया, तब प्रभु नित्यानन्द जी का नृत्य आखो के सामने घूमने लगा। नाम में भीतर पुलकित, शरीर अवश, बहुत देर बाद प्रकृतिस्थ हुई। *

शामको—आसन में बैठी देख रही हूं। गोंसाईजी के पास वही अलखला पहने साधुबाबा खड़े हैं। मैंने गोंसाइजी से कहा, आज मैं श्रीराधाकृष्ण जी की लीला दर्शन करुंगी, साधुबावा के साथ नही जाऊंगी। गोंसाई जी ने उनको क्या कहा, वह चले गये। लीला दर्शन होना शुरु हो गया; सन्ध्या हुई है, सखियों के साथ राधारानी अभिसार में जा रही हैं, सखियों ने थालि में, मलाई, मक्खन, खीर, फल सब लिया है। मुझे एक ने कहा आज निधुवन में मिलन होगा। मै भी उनके साथ गई, तब श्रीकृष्ण नही आये थे। बहुत सी डलियों में फूल थे, उन फूलों से कुञ्ज सजाया गया। राधारानी को फूल के जेवरो से सजाया, इतने में बंसरी हाथ में लेकर श्रीकृष्णजी आये, सखियों ने राधारानी को श्रीकृष्ण के बांई ओर बैठा दिया श्रीराधाकृष्ण को दो माला पहना ये गये। सखियो ने मुझे कहा तुम इनके चरणों को धो दो। मैंने उनके चरण धोकर वह अमृत पान करके धन्य हो गई। मैं अपनी भाग्य की बात कैसे कहूं। सद्गुरु ने कृपा करके मुझे इस अवस्था में रक्खा हैं, फिर मैंने उनके हाथ में पानी दिया,

* श्रीश्रीसद्गुरुउपदेशामृत प्रथम खण्ड ६ आश्विन

वे हाथ धोकर खाने बैठे। सखियाँ फूलों का पंखा फलने लगीं। खाने के बाद फिर मैंने उनके हाथ में पानी दिया। उन्होने हाथ मुहं धोये। एक सखि ने हाथ मुहँ पोंछ दिये। मुझे वह, मलाई, मक्खन और खीर प्रसाद दिया और वह भुवनमोहन युगल रुप दर्शन करने को कहा, मैं प्राण भर कर देख रही हूं और आनन्द सागर में डूब गई।

७ आश्विन

सवेरे—आसन में बैठे नाम करते करते देख रही हूं, गोंसाई जी, माताठाकुरानी, श्रीकृष्ण, श्रीराधा वहाँ हैं। वही अलखल्ला पहने साधुबाबा खड़े हैं। मैंने गोंसाई जी से कहा, साधुबाबा मुझे अभी पकड़ ले जायेंगे मैं इस समय नही जाऊँगी। गोंसाई जी ने माताठाकुरानी को हँसते हँसते कहा कल शाम को भी वह नही गई थी, यह कह कर उन्होने कहा माँ जिन स्थानों में तुम्हें ले जाने की व्यबस्था की गई हैं वहाँ तुम्हें जाना पड़ेगा, इस से तुम्हारा मंगल होगा, मै—मंगल अमंगल नही जानती आपके पास रहने में ही मुझे अच्छा लगता है। देह रहते हुये या देह त्याग के बाद ही हो मुझे आप लोगों से भिन्न न कीजिये, आप के पास मेरी यह प्रार्थना है। तब गोंसाई जी ने हंसते हुये कहा, ऐसा ही होगा माँ इसके बाद तुम जैसी अवस्था चाहोगी वैसी ही पाओगी। हमारे पास अनन्त काल रहोगी। सब समय आसन में वैठते ही हम लोगों को देखोगी और लीला दर्शन होगी। अगर रात में वैठ सको तो अच्छा है चेष्टा करने से हो जायगा। इसके बाद सुन्दर अवस्था लाभ होगी। मैं प्रत्येक समय तुम्हारे पास हूं।

शाम को—आसन में वैठी हूं, गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं।

वही साधुबाबा आकर मुझे ले गये। गोंसाई जी जैसे उनको कुछ कह रहे थे। कैसे ले जाते है मैं कुछ भी नही जान पाती। आँख खोलकर देखती हूं कहाँ आई हूं। माँ गंगा कितने ज्यातिर्मय पुरुष सब स्नान कर रहे हैं। कही हरिसंकीर्तन हो रहा है। कोई जप करने में मग्न हैं। साधुबाबा ने मुझे स्नान करने के लिये कहा मैं साहस नही पा रही हूं खड़ी हूं। साधुबाबा ने तिन बार मुझे पानी में डुबाकर उठा लाये। अत्यन्त आनन्द हुआ। मैने पूछा इस गंगा का क्या नाम है। यह कौन स्थान है? साधुबाबा ने कहा, इस गंगा का नाम मन्दाकिनी है। यहाँ सद्गुरु की कृपा बिना कोई नही आ सकता। उसके बाद गोंसाई जी और माताठाकुरानी के पास ले आये। मैं दौड़ कर माताठाकुरानी को पकड़ कर कह रही हूं, साधुवावा ने आज मुझे तीन बार पानी में डुबाया था। खूब अच्छा लगा था। उन्हाने ज्यादा बात नही कहा प्यार करके मेरे पीठ में हाथ फेरने लगीं। गोसाई जी से कहा, क्या देख रही हूं, कहां जाती हूं, किस प्रकार जाती हूं, कुछ भी समझ में नही आता। भीतर आनन्द से पूर्ण हो जाता है पर आपके पास जो आनन्द पाती हूं उसकी तुलना नही। गोंसाई जी ने कहा माँ सबकोही नियम के साथ चलना पड़ता है। यह सब दुर्लभ अबस्था, पथ का खोज करा देती है। बहुत परीक्षा, कष्ट तुम्होर जीबन में हुआ है अब और देर नही है, अब जो अबस्था तुमको मिल्गी वह भी दुर्लभ है। यह सब लिख रक्खो। मैंने कहा आप लिखने को कह रहे हैं, अगर लोग बिश्वास न करें? तबउन्होने कहा--तुम मनुष्यों के लिये नहीं लिख रहे हो, सत्य बात लिखोंगी इसमे अविश्वास करने का कुछ नही है—सत्य कहने में कभी नहीं डरना सत्य सर्वदा सत्य ही है। जो अविश्वास करेगा वह खुद अपना ही नुकसान करेगा।

८ आश्विन

सबेरे--आसन में बैठ कर गोंसाईजी और माताठाकुराणी को प्रणाम किया देखा यमुना का तीर है। देखा सखियाँ यमुना के पानी में मुहँ निकाल कर डुबी हुई हैं। पानी में जैसे कमल के फूल खिले हैं। मैं माताठाकुरानी के पास बैठ कर यह देख रही हूं। राधारानी और सखियों के कपड़े यमुना के किनारे रक्खे हुये हैं, इतने में श्रीकृष्ण जी आकर सब कपड़ों को लेकर कदम्ब के वृक्ष के ऊपर चढ़ बैठे। गोंसाई जी खूब हँस उठे। माताठाकुरानी मुस्कराने लगीं। मैंने सखियों से जाकर कहा, श्रीकृष्णजी तो तुम्हारे कपड़े लेकर कदम्व के वृक्ष पर बैठे हैं। राधारानी बीच पानी में थीं। सब तब कपड़े माँगने लगी। गोंसाई जी देख रहे हैं और हँस रहे हैं, फिर दिखाई नही दिया। फिर देखा गोंसाई जी पाँच छः साल का एक साँवला सुन्दर लड़के को लेकर बैठे हैं। मुझ से पूछा इसको पहचान रही हो। मैंने देखा वह गोबिन्द जी हैं। गोंसाई जी की गोद में मुँह छिपाकर मुझे देख रहें हैं और हंस रहें हैं। क्या सुन्दर भाब है। यह सब दर्शन एक मात्र ठाकुर जी की कृपा में हो रहा है। श्रीवृन्दाबन में आकर एक मुठी प्रसाद पाकर रह संकूगी या नही इस लड़के को पूछा था। और एकबार देखने की इच्छा थी। गोबिन्द जी कृपा करके आज दिखाई दिये।

शामको--आसन में बैठने के बाद देखा तमाल के वृक्ष के नीचे यमुना के किनारे गोंसाई जो और माताठाकुरानी बैठे हैं। कोई सखि माला गुंथ रही हैं, कोई सखि फूल तोड़ रही हैं। गुरुदेब और माँ जननी बैठे हैं। राधाकृष्ण भी बैठे हैं। एक एक बार गोंसाई जी, माताठाकुरानी, गुरुदेब और माँ जननी सब श्रीराधाकृष्ण के साथ एक हो जा रहे हैं।

ओर एक एक बार उन सबको पृथक देख रही हूं। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। इतने में वही साधुबाबा आकर मुझे ले गये। एक मनोरम तपोबन देख रही हूं। वहाँ बहुत मुनिपत्नियाँ हैं। साधुबाबा ने कहा, यह बशिष्ठदेब जी का आश्रम है।

एक ज्योतिर्मयी स्त्री घर (लता और पत्तियों से टकी हुइ एक कुटि) में थीं। बाहर आकर साधुबाबा से मेरे वारे मे पूछा, परिचय देने के बाद उन्होनें खूब आनन्दित होकर मुझे बैठने को कहा, साधुबाबा ने कहा यह देबीं अरुन्धतीं हैं। मैंने प्रणाम किया। उन्होने सिर पर हाथ रखकर आशींर्बाद किया। एक पत्ते की कटोरीं में करके फल प्रसाद दिया। कमण्डल में से ठंडा पानीं दिया। मैंने कमंडल में मुँह न लगा कर पानी पिया। थोड़ी देर बैठकर चली आई।

९ आश्विन

शामको--आसन में बैठकर नाम कर रही हूं, फिर वही साधुबाबा आकर मुझे ले गये। वहाँ जाकर देखती हूं सब उज्वल बत्ती जल रही है। नृत्यगीत हो रहा है। ज्योतिर्मय पुरुष सब बैठे हैं साधुबाबा ने कहा यह चन्द्रलोक हैं। चली आई। गोंसाई जी बैठे हैं उनको कहा, अब इसको सप्त तीर्थके पानी से स्नान कराने से ही तुम्हारा सब काम खतम हो जायगा।

१० आश्विन

सबेरे--आसन में बैठी हूं। देख रही हूं माँ यशोदा गोपाल को गोंद में लेकर नबनी खिला रहीं हैं। इतने में सखियाँ राधारानी को ले

आईं माँ यशोदा उनको भी गोद में बैठाकर नबनी खिलाने लगीं। मेरा गोपाल भी वहाँ सखियों के पास जाकर नवनी खा रहा हैं।

शामको--आसन में बैठे देख रही हूं, मंडप में दुर्गाप्रतिमा हैं और प्रतिमा के दाहिनी ओर गोंसाईं जी और माताठाकुरानी ज्योतिर्मय रूपमें खड़े हैं। बाँईं ओर गुरुदेब और माँ जननी ज्योतिर्मय रुपमें खड़े हैं। देख कर प्राण आनन्द सें पूर्ण हो गया, वही पर आरती के लिये पञ्चप्रदीप धूप, धूना सब सजाई रक्खी है। मैंने वह सब लेकर गोंसाईं जी, माताठाकुरानी, गुरुदेब और माँ जननी को आरति किया। डिब्बे में सिंदुर भरा था। माताठाकुरानी और माँ जननी को पहना दिया। फूल के माला थे उनके गले में पहना दिया। कितना आनन्द हो रहा था क्या कहूं। ठाकुर सब तुम्हारी कृपा हैं। मेरी कुछ भी शक्ति नहीं है। आज इस शुभक्षण में इष्टदेब की पूजा करके पूर्ण आनन्द मिला। गुरुदेब का वह ज्योतिपूर्ण चेहरा अभी भी आखों के सामने है।

१९ आश्विन

सबेरे--आसन में बैठी हूं। गोंसाईं जी और माताठाकुरानी हैं। वही साधुबाबा हाथ में एक कमंडल लेकर आये। गोंसाईं जी को दिखाकर कहा, इसमे समस्त तीर्थों का पानी है। आज देबीं के आवहन के लिये लाया गया है। तब वह पानी मेरे सिर में डाल दिया। गोंसाईं जी को प्रणाम करके कहा और कोई आदेश हैं, अनुमती कीजिये। उन्होने कहा अभी कोई काम नहीं है, मंगल हो, कहकर आशीर्बाद किया। मैंने उनको प्रणाम करके कहा, अब आपका नाम कहना पड़ेगा। उन्होने मुस्कराकर कहाँ, मैं गोंसाइ जी का दासानुदास हूं, मेरा नाम उद्धब है, मैंने पूछा आपके साथ

फिर कब साक्षात्कार (मुलाकात) होगी। उन्होने कहा प्रभु की इच्छा होने से ही होगी। यह कहकर चले गये। उसके बाद देखा श्रीकृष्ण और बल्राम गोष्ठ में जा रहे हैं। कितने सुन्दर सजे हैं। सखायें सब साथ में हैं। माँ यशोदा अनिमेष नयन में गोपाल की ओर देखे हैं। सखियाँ पानी लेकर जा रही हैं कृष्णजी के साथ भेंट हुई। एक सखीने पूछा, कन्हाई आज किस बन में जाना होगा? श्रीकृष्ण ने कहा कालिंदी के तीर। सखियाँ सब चली गई।

शामको--आज प्रतिमा दर्शन करने गई। तीन जगह प्रतिमा दर्शन करके लाला जी के कुञ्जमें श्रीकृष्णचंद्र को देखने गई। ठाकुरदल्हान में जोर से नाम शुरु हो गया कि अपने को पकड़ कर न रख सकी इच्छा हुई कि वही बैठ जाऊँ। संध्या हो गई थी। बैठने से कब उठ सकूंगी ठीक नही। तब मनमें ठाकुर को बुला रही हूं किसी प्रकार घर तक जा सकूं तो हो। फिर गोपीश्वर महादेव को दर्शन करके उनका सखीवेश मे नृत्य देखकर एक दम बाह्यज्ञान लुप्त होने की अवस्था हुई। ठाकुर रक्षा कीजिये, जय गुरुदेब कहकर ठाकुर को स्मरण करने लगी। उसी अवस्था में चलते चलते देखा एक सात आट साल के लड़के ने मेरी बाई हाथ को पकड़ा, तब भाव में ही कह रही हुँ मेरे साथ जोजा रहे हो अकेले कैसे लौटोगे। तब उसने उँगली उठाकर दिखाया, उसकी तरह एक सात आट सालकी ललकी ने मेरे दाहिने हाथ को पकड़ा। वे धीरे धीरे मुझे घर तक ले आये। फिर मैंने कहा तुम दोनों कैसे जाओगे। तब उस लड़की ने उँगली उठाकर दिखाया कि लाला जी खड़े हैं। मैं तब भी स्थिर नही हो सकी थी। आसन में बैठी तब देख रही हूं बही लड़का लड़कि दोनों श्रीकृष्णचंद्र और राधारानी होकर युगल रुप में खड़े हुये। एक किनारे लालाजी हाथ जोड़े खड़े हैं। मैं

कुछ भी न समझी। गोंसाईं जी वही बैठे थे। मैंने उनसे पूछा यह सब क्या देख रही हूं, उन्होंने खूब व्यस्त होकर कहा, देखो देखो खूब अच्छी तरह देखो। प्रत्यक्ष दर्शन बहुत भाग्य से होता है। मैंने कहा मैं भाग्य नही समझती, सब आपकी ही कृपा से आपकी लीलारूप दिखा रहे हैं। उन्होने हँसते हुये मेरी तरफ देखकर मुझे असीम आनन्द में डुबा दिया।

१२ आश्विन

सबेरे—आसन में बैठे नाम कर रही हूं। लीला दर्शन किया। सखियों ने कहा आज यमुना के किनारे जाकर माता कात्तायनी की पूजा करनी पड़ेगी। तब फूल की माला, फूल, चंदन और पूजा की सब सामग्री लेकर चलीं। उनके साथ मैं भी गई। वहाँ यमुनाके किनारे जाकर सब सामग्री वहाँ रखकर, सब ने यमुना में स्नान किया। गोंसाईं जी ओर माताठाकुरानी भी वहां हैं। यमुनाके किनारे माँ कात्तायनी की पूजा हुई। मैंने भो वह फूल लेकर गोंसाईं जी और माताठाकुरानी के चरणों मे दिये श्रीकृष्णजी आकर खड़े हुये। सखियों ने राधारानी को लाकर श्रीकृष्ण के बांई ओर खड़ा कर दिया। उनके चरणों में भी फूल दिया। वह अपूर्व दर्शन करके खूब आनंद हो रहा है। क्रमशः सब ओझल हो गया।

शामको—आसन में बैठ कर देखा एक कुञ्ज में पाठ हो रहा है। गोंसाईंजी, माताठाकुरानी, व्रजभाइयाँ और अनेकों बैठ कर पाठ सुन रहे हैं।

१३ आश्विन (महानवमी)

सवेरे—आसन में बैठी, आज मेरे परमाराध्य गुरुदेवजी का तिरोधान का दिन था। मन बहुत ही व्यथित था। नाम कर रही हूं। देखा, उज्वल

रत्न सिंहासन में गुरुदेब ज्योतिर्मय रुप में बैठे हैं। निकट ही माँ जननी वैठीं है। चारों ओर ज्योति की छटा फैल रही थी। प्राण भरकर वह रुप-माधुर्य देखकर सब कष्ट दूर हो गया। प्राण शान्तिपूर्ण हो गया। जय गुरु-देव! धन्य तुम्हारी लीला।

शामको—आसन में बैठी हूं। देख रही हूं, गोंसाईं जी और माता-ठाकुरानी हैं। गोंसाई जी गुरुदेव को छाती से लगाये हुये हैं। कभी दोनों एक हो जा रहे हैं और कभी दोनों को पृथक देख रही हूं। वहाँ वहुत फूल थे। मैंने वह फूल लेकर गोंसाई जी के चरणों में दिया। देखते देखते गुरुदेब और गोंसाई जी एक साथ मिल गये, गोंसाईं जी के पास माता-ठाकुरानी देबी रुप में वह स्थान उज्वल करके बैठी हैं। उनके चरणों में भी फूल देकर पूजा किया।

१४ आश्विन (विजयादशमी)

सवेरे—आसन में बैठ कर नाम कर रही हूं। लीला दर्शन किया। एक कुञ्जबन में सखियाँ सव बैठ कर माला गुंथ रही हैं। मुझको कहा आज यहाँ बनभोजन होगा। अभी सब आयेंगे। बहुत मलाई, खीर, दही, नबनी इत्यादि सब हँड़ियों में रक्खी हैं। तरह तरह के फल और लड्डू हैं। गोंसाँई जी, माताठाकुरानी, गुरुदेव, माँ जननी, गोबिंदजी, राधारानी सखियाँ सखायें सब चारो तरफ हैं। सखियों ने वह सब खाने की चीजें सबको दिया। आनन्द करके सबने खाया सखियों ने कुछ कुछ प्रसाद लाकर मेरे हाथ में दिया। मैंने आनन्द करके वह सब देबदुर्लभ महाप्रसाद पाया। इस प्रकार दशहरा उत्सब दर्शन किया।

१५ आश्विन

सबेरे—आसन में बैठ कर नाम करते करते देख रही हू श्रीमती राधा-रानी श्रीकृष्ण के हाथ में से बंसरी छीन लेने की कोशिश कर रही हैं। श्रीकृष्ण भी नहीं देंगे और राधारानी भी नहीं छोड़ेंगी। सखिया आकर श्रीकृष्ण से कह रही हैं सबेरे ही दोनों ने लड़ाई शुरु कर दी? एक बार दो न बंसरी बजाने की इच्छा हुई हैं। श्रीकृष्ण ने कहा राधारानी कैसे बजायेंगी? मेरे सिबाय कोई नहीं बजा सक्ता। वहीं पर गोंसाई जी और माताठाकुरानी वैठे थे। मैंने गोंसाई जी से पूछा, बंसरी क्या श्रीकृष्ण के सिबाय और कोई नहीं बजा सकता। उन्होंने कहा राधारानी के हाथ में देकर ही ही देखो न अभी बंसरी बज उठेगी, राधा-कृष्ण तो एक ही हैं। श्रीकृष्ण तब खड़े खड़े हंस रहे हैं। राधारानी रुठ कर बैठी हैं। मानिनीका मान देखने के लिये श्रीकृष्ण की यह एक लीला हैं। श्रीकृष्ण राधारानी को बंसरी देने गये तब वह मान करे बैठीं थी मुंह फेर लिया। सखियां सब खड़ी हँस रही हैं। इतने में गोंसाई जी खूब जोर से हँस उठे। तब श्रीकृष्ण गोंसाइ जी के साथ एक होकर मिल गये। राधारानी भी माता-ठाकुरानी के साथ एक हो गई। तब केबल गोंसाई जी और माताठाकुरानी को देखने लगी। सखियाँ सब नृत्य करने लगी। वहाँ कमल के फूल थे। मैंने उनके चरणों में देकर प्रणाम किया।

शामको—आसन में वैठी हूं, खूब नाम हो रहा है। एक दम नाम में डूब गई दर्शन नहीं हुआ। बाह्यज्ञान होने पर देख रही हूं घर खूब सुगंध से पूर्ण हो गया है, ठीक जैसे इत्र की खुशबू से, कुछ भी देख न सकीं। मन और प्राण को मोहित करने वाली वह खुशबू चारों ओर फैल गई।

१६ आश्विन

सबेरे—आसन में बैठी हूं। देखा, यमुनाके किनारे कदम्ब के वृक्ष में झूला डाला गया है। सवेरे ही श्रीराधाकृष्ण ने झूलना शुरु कर दिया है। सखियाँ झूला दे रही हैं। पानी की गगरियाँ सब यमुना के किनारे रक्खी हैं। मुझ से कहा झूलन नही देख पाइ हो यह देखो झूलन। गोंसाई जी और माताठाकुरानी एक झूले में, गुरुदेब और माँ जननी दूसरे एक झूले में बैठे हैं। सखियाँ सब झूला दे रही हैं। क्या सुन्दर दृश्य। मैं मुग्ध हो कर देख रही हूं। कहाँ पर हुँ कुछ भी पता नहीं। उसके बाद सब ओझल हो गया और कुछ न देख सकी।

शामको—आसन में बंठी हूं। खूब नाम चल रहा है। सुषुम्ना नाड़ी से नाम चल रहा है भीतर एक अनुभूती हो रही हैं। सर्वांगं में एक आनन्द की धारा वह रही है।

१७ आश्विन

सबेरे—आसन में बैठे नाम कर रही हूं। कल शाम की तरह शरी रका भीतरी भाग मधुमय हो जा रहा है। गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। धीर समीर कुञ्ज के श्याम राय आकर कह रहे हैं, हम लोगों को नही देखा, चलो एक बार देख आओगी। मैं—यह तो तुमको देख रही हूं, क्या देखने जाऊँगी। तब फिर वह हठ प्यार करके कहने लगे, पास ही है ज्यादा दूर नही। मैं—इसके बाद जाऊँगी। नही अभी चलो; कह कर हठ करने लगे। मैं—मेरा तो माला तिलक नही है; साधन, भजन कुछ नही करती, मुझे इतना अच्छा क्यों लग रहा है। तब उन्होने कहा, तुमको कुछ जरुरत नही हैं। तब गोंसाई जी से कहा, जाने को कह न तुम न

कहने से वह कभी नहीं जायगो। गोंसाईं जी ने कहा जा कर क्या करेगी ? तब श्यामराय ने कहा, मेरी इच्छा हो रही है एक बार जाकर देख आये। गोंसाईं जी ने मुझे कहा जाओ श्याम को देख आओ। तब आसन से उठकर श्यामराय को राधारानी के साथ देख कर मोहित हो गई। खूब जोर से नाम होने लगा। मैं—इसलिये मुझे ले आये, सब मनुष्यों के पास मुझे लज्जित करने के लिये। तब श्यामराय और राधारानी मेरी तरफ देख कर मुस्कराने लगे ? मैं तब भाग आई।

शामको—आसन में बैठ कर नाम कर रही हूं। कहीं कीर्त्तन हो रहा है। सखियाँ जा रही हैं मुझे भी अपने साथ ले गई। कहा, कालिन्दी के तीर कीर्त्तन हो रहा है। एक कुञ्ज के द्वार में घुस रही हूँ फूल पत्तियों से सजा हुआ एक दरवाजा ? मुझे देखकर एक ने पूछा, बहिरंग न अन्तरंग। सखियों ने कहा अन्तरंग। रास्ता छोड़ दिया। भीतर जा कर देखा। फूलपत्तों से सजे हुये तीन सिंहासन। गोंसाईंजी माताठाकुरानी, गुरुदेव माँ जननी, राधाकृष्ण तीन सिंहासन में बैठे हैं। वहाँ महाप्रभु नृत्य कर रहे हैं। मृदंग, करताल सब बज रहे हैं। मधुर हरिध्वनी चारो ओर गूंज रहा है। उस अपूर्व दृश्य की वर्णना कैसे करूँ, महासंकीर्त्तन। मधुर नृत्य। गोंसाईं जी ने भी उतर कर नृत्य में योगदान किया, सखियाँ भी गोलाकार में घूम घूम कर नृत्य करने लगी। उसके बाद हरिलूट हुआ। प्रसाद दिया।

१८ आश्विन

सवेरे—आसन में बैठे नाम कर रही हूं। देखा, राधाकृष्ण दोनों आकर खड़े हुये। गोंसाईं जी और माताठाकुरानी बैठे हैं।

शामको—आसन में बैठे खूब नाम शुरु हो गया। फिर देख रही हूं सखियों के साथ श्रीमती राधारानी निधुवन में कृष्णदर्शन करने जा रही हैं। भाव में विभोर आवेश में देह अवश। ललिता और विशाखा दोनों पकड़ कर ले जा रही हैं। एक एकवार चारो ओर देख कर न जाने क्या अनुसन्धान कर रही हैं। निधुवन में जाकर देख रही हूं श्यामसुन्दर अपने मन में वंसरी वजा रहे हैं। सखियों ने श्रीमति को ले जाकर श्याम के वाँई ओर खड़ा कर दिया। चारो ओर घी के दिये जला दिये। गोंसाई जी माताठाकुरानी, गुरुदेव, माँ जननी सव वहाँ है। सखियाँ राधाकृष्ण को फूल का पंखा झलने लगी। फिर मन्दिर बन्द कर के सब चले गये।

१६ आश्विन

सवेरे—आसन में बैठी हूं। देख रही हूं श्रीकृष्ण, बलराम सव सखाओं के साथ आये है। गाय वछड़ों से मकान भर गया है। कृष्ण और वलराम गोष्ठ में जाने के वेश में सजे हुये खड़े हैं। मुझसे कहा अपने गोपाल को दो हमारे साथ गोष्ठ में जायगा। माँ यशोदा वहाँ नबनी लेकर खड़ी हैं। गोपाल को नबनी खिलाने लगीं। गोपाल ने गोद में बैठ कर नबनी खाया। फिर सब चले गये। आगे आगे गाय वछड़ और पीछे पीछे कन्हाई, बलराम और व्रजबाल कें जा रहे हैं।

२० आश्बिन

सबेरे—आसन में बैठे देख रहीं हूं। गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। गुरुदेब और माँ जननी खड़े हैं। प्रणाम किया। उन्होने आशीर्बाद

किया। फिर दादागोंसाई आये। आज प्रथम दादागोंसाई को देखा। बहुत आनन्द हुआ। पैर पर गिर कर प्रणाम किया और प्रेम भक्ति की भिक्षा माँगी। उन्होने कहा माँ तुम भगवती हो; गोंसाई जी ने कहा हैं तुम उनके हृदय की वस्तु हो। ऐसा सौभाग्य किसको मिलता है। माँ नाम करो आनन्द में डूब जाओगी।

मैंने उनके पैरों की धूलली। सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद किया। फिर देख रही हूं राधाकृष्ण खड़े हैं मन्दिर में जैसी मूर्त्ति रहती हैं। मैंने कहा ऐसा नही, असल रुप में दोनो खड़े हो। तब दोनों हंस कर एक दूसरे से लिपट कर खड़े हुये।

शामको—आसन में बैठ कर देख रही हूं गोंसाई जी और माता-ठाकुरानी बैठे हैं। खूब बड़ी फूल की माला उनके गले में हैं। पास ही गुरुदेब और माँ जननी बैठे हैं। उनके गले में भी बड़े बड़े फूलों की माला पहनाई हुई हैं। वहाँ कमलके फूल हैं। मैंने वह कमल लेकर गोंसाई जी माताठाकुरानी, गुरुदेब और माँ जननी के चरणों में दिया। फिर देखा राधा-रानी और श्रीकृष्ण दोनों फूल के सिंहासन में बैठे हैं। मधुर हंसि हंस रहे हैं। मैंने कमल के फूल लेकर उनके चरणों में दिये। इतने में सखियों ने आकर, आरती की। तब राधाकृष्ण दोनों मिलकर खड़े हुये। अपूर्व दर्शन हुआ। गोंसाई जी, माताठाकुरानी, गुरुदेव, माँ जननी, राधाकृष्ण सब एक हों गये। फिर और कुछ नही देख मिला।

२१ आश्विन

सबेरे—आसन में बैठी, गोंसाई जी और माताठाकुरानी को दर्शन किया। फिर राधारानी और सखियाँ आई। सखियों ने कहा आज राधारानी

को छिपा रक्खूगीं। कन्हाई आकर देख न पाये। क्या करेंगें देखुंगी। एक कुञ्जके अन्दर राधारानी को रख कर सखियाँ सब बाहर बैठी हैं। वंसरी बजाते बजाते श्रीकृष्ण आकर खड़े हुये ; सखियों से कहा, राधा को नही देख रहा हूं, राधा कहाँ ? सखियों ने कहा आज राधा नहीं आ सकीं। उसको घर में बन्द करके रक्खा है। यह बात सुन कर श्रीकृष्ण वहीं बैठ गये। करुण नयन में सखियों की ओर देख कर कह रहे हैं। किसी उपाय से उसे नही ला सकती हो। मैं राधा का बिरह सहन नही कर पा रहाँ हूं। ललिता ने कहा कुल की कूलबधु सब समय बन में क्यों आने देंगे। श्रीकृष्ण व्याकुल होकर कह रहे हैं तुमलोग राई को ला दो। तब श्रीकृष्ण का बिषादमय मुँह देख कर सखियाँ राधा को और छिपा कर न रख सकीं। कुञ्ज के भीतर से श्रीमती को बाहर लाकर कृष्ण के पास बैठा दिया। श्रीकृष्ण ने आवेग में भरकर राधा को छाती से लगा लिया। मैं मुग्ध होकर वह सब देख रही हूं। गोंसाई जी ने मुझे कहा, यह सब प्राण भर कर देखो और लिख रक्खो यह सब सत्य हैं। लिखा हुआ में सब सत्य ही रहेगा। यही वृन्दाबन लीला प्रकाश करने की मेरी भी इच्छा थी। महाप्रभु जो प्रकाश कर गये हैं वह उनके भक्तों ने नाना ग्रन्थों मे लिखा है। अब तुमको लाकर यह सब दिखाया जा रहाँ है। इस लिखन के अन्दर मेरी शक्ति रहेगी। मैंने कहा—आप के तो कितने भक्त हैं उनके द्वारा क्यों नही लिखाया ? उन्होने कहा, यह सब दर्शन होने से वे सोचेंगे कि उनको सधना से यह हो रहा है। मन में अहंकार आयगा। तुम्हारे में तो वह भाव नहीं है। गुरु कृपा ही तुम्हारी एक मात्र भरोसा है। इसीलिये अन्य किसी के लिखने से इस भाव का नहीं होगा। वही असल बस्तु है समय होने से ही प्रकाश होगा।

शामको—आसन में बैठी हूं। देख रही हूं ; गोंसाई जी खड़े हैं। माताठाकुरानी बैठी हैं। बाबा गम्भीरनाथ जी खड़े हैं। मैंने प्रणाम किया। सबने आशीर्वाद किया। नाथ जी ने कहा तुम्हारे ऊपर गोंसाई जी की अशेष कृपा है। जो कुछ बन्धन था सब कटा लिया है। अष्ट सखियों में से एक सखी, तुम्हारे गुरुदेव सब जानते थे। मैं……आशीर्वाद करिये कि मैं नाम में डूब जाऊँ। उन्होने कहा, कोई डर नही है, गोसाई जी सर्वदा तुम्हे रक्षा कर रहे हैं। फिर इतना नाम होने लगा कि मैं उसी आनन्द में डूब गई।

२२ आश्विन

सबेरे—आसन में बैठे नाम कर रही हूं। गोंसाई जी, माताठाकुरानी, गुरुदेव, माँ जननी सब बैठे हैं। सबको प्रणाम किया। देख रही हूं यमुना के तीर सखियाँ पानी लेने आई हैं। गगरियों को किनारे मे रखकर पानी में उतर कर पानी से खेल रही हैं। श्रीकृष्ण आकर पानी में उतरे। श्रीकृष्ण, राधारानी, सखियाँ सब पानी में खेलने लगीं। फिर सब ऊपर उठ आये। कपड़े पहने। रंगीन दुपट्टा सब ने सिर में दिया श्रीकृष्ण एक कदम्ब वृक्ष के नीचे खड़े हुये। सखिओं ने राधारानी को श्रीकृष्ण के बाँई ओर खड़ा कर दिया। मिलकर खड़े होकरदोनों ने बंसरी पकड़ी। वह भुवनमोहन रूप देखते देखते लीन हो गई।

२३ आश्विन

सबेरे—आसन में बैठी—नाम हो रहा है। सब मधुमय हो जा रहा है। गोंसाई जी, माताठाकुरानी हैं। वहाँ गुरुदेव आनन्दपूर्ण मूर्त्ति में

खड़े हैं। वहाँ बहुत कमलके फूल थे। मैंने उनके चरणों में देकर प्रणाम किया। यह मधुर दृश्य देखकर जीवन धन्य हो जा रहा है। नाम में लीन हो गई। देखा, एक छोटा लड़का और एक छोटी लड़की मेरे पास आकर बैठे। फूल के मुकुट और फूलों के जेवर पहने हुये। मैंने कहा, तुमलोग कौन हो? लड़की ने कहा मैं राधा हूं, लड़के ने कहा मैं कृष्ण हूं।

२४ आश्विन

सवेरे—आसन में बैठे नाम कर रही हूं। गोंसाई जी और माता-ठाकुरानी बैठे हैं। प्रणाम करके उनके पास बैठी। गोंसाँई जी ने कहा आज बाबा विश्वनाथ तुम्हें एक बार 'काशी' में भेजने के लिये अनुरोध कर रहे थे। मैंने पूछा, आपने क्या कहा।

गोंसाई जी—अभी नही होगा जाओ, उसके बाद देख रही हूं, राधाकृष्ण और सखियाँ यमुना के पानी में तैर रही हैं। सखियों ने मुझे बुलाया। कहा आओ तैरने आओ। मैं—मैं तरना नही जानती डूब जाऊँगी। तब एक सखी ने आकर मुझे पकड़ कर पानी में तैरा दिया मैं डूबी नहीं। देख रही हूं मैं भी तैर रही हूं। यह देख कर वह सब हँस उठी। सब जदृस्य हो गया देखा घर में बैठ कर नाम कर रहीं हूं।

शामको—आसम में बैठ कर नाम करते करते उसी में डूब गई। गोंसाई जी और माताठाकुरानी को प्रणाम किया फिर लीला दर्शन हुआ। गोष्ठ से कन्हाई और बलराम नन्दालय में आकर माँ कहकर बुलाते ही, माँ यशोदा दौड़ आई और गोपाल को गोद में लिया और कहा, आज इतनी

देर क्यों हुई। गोपाल ने कहा—आज बहुत दूर बन में गये थे माँ तुमने बंसरी नही सुनी थी ? तब माँ यशोमति ने कहा। बेटा उतनी दूर और न जाना। नीलमणि ने कहा माँ खाने को दो बहुत नीद आ रही है। यशोदारानी जल्दी से मलाई, नवनी, लड्डू इत्यादि ले आईं। व्रजबालकें प्रत्येक दिन गोष्ठ से लौटने के समय माँ यशोदा के पास खा जाते हैं। सब ने एक साथ बैठ कर खाया। तब गोपाल ने बलराम को कहा भइय्या तुम माँता रोहिणी के पास जाओ। मैं सोने जा रहा हूं यह कह कर एक छप्पर के कमरे में जा कर सो गये। आज वंशीवट में जाकर वंशीध्वनी करेंगे। फिर यमुना के किनारे जाकर योगमाया को आश्रय करके महारास करेंगे। योगमाया ने माय में सबको भुला दिया कोई कुछ नही जान सके। कुछ देर बाद श्रीकृष्ण वंसरी लेकर वंशीवट में गये और वंसरी बजाने लगे। वंसीध्वनी सुन कर गोपियाँ जो जिस अबस्था में थी उन्मादिनीं होकर दौड़ आईं। राधारानी को दो सखियाँ पकड़ कर ले जा रही हैं। प्रेममयी का वह अपूर्व भाब, बर्णन करना मेरी साध्य के अतीत है। सखियों ने मुझे कृपा करके साथ जाने के लिये कहा। सखियाँ, राधारानी सब यमुना के किनारे जाकर, राधारानी को श्रीकृष्णके बाँईं ओर खड़ा कर दिया, और सब गोल होकर घिर कर नृत्य करने लगीं। बीच में राधाकृष्ण और चारो तरफ सखियाँ और एक सखिके बीच एक कृष्ण हैं। जितनी सखियाँ उतने कृष्ण। अलात चक्र की तरह सब घूम रहे हैं। क्या देख रही हूं, क्या लिखूं लीन हो गई। जब ठीक हुई तो देख रही हूं गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। मैं उनके पास बैठी हूं वहाँ बैठ कर देखने लगीं। गोंसाई जी ने मुझे कहा, लिख रक्खो, अपूर्व दर्शन महाभाग्य से होता है। मैं—आप ही तो कृपा कर यह सब लीलाँ दिखा रहे हैं।

श्रीवृन्दाबन में लाकर कृपा करके श्रीवृन्दावन लीला दर्शन करा रहे हैं। क्या देख रहीं हूं। कुछ भी मैं अनुमान नहीं कर पा रही हूं। आनन्द में प्राण भरपूर हो जा रहा है, लिख रखने कोकह रहे हैं क्या बर्णन करुं। मेरी क्या क्षमता है। व्रजलीला लिखना क्या मेरी साध्य में है। आप शक्ति दे रहे हैं इसलिये थोड़ा लिख पा रहीं हूं। उन्होने कहा जो कुछ लिखोगी उसीमें बहुत काम होगा। फिर सब अदृश्य हो गया। ठाकुर जो कुछ लिखा रहे हैं वही लिख रही हूं।

२५ आश्विन

सबेरे—आसन में बैठ कर गोंसाई जी और माताठाकुरानी को प्रणाम किया मैं देख रहीं हूं कन्हाई, बलराम और सब व्रजबालकें गोष्ठ में जा रहे हैं। माँ यशोदा ने अलका तिलका से सब को सजा दिया। उस रुप की तुलना किस के साथ दूँ? अपरुप दृश्य गाय और बछड़े सब आगे आगे जा रहे है। व्रजबालकें नृत्य करते करते पीछे पीछे जा रहे हैं। श्रीकृष्ण की वंशीध्वनि सुनकर गायें सब पीछे घूम घूम कर देख रहीं हैं। सखियाँ यमुना में पानी लेने जा रहीं हैं। श्रीकृष्ण के साथ भेंट हुई। पूछा आज कहां जाओगे? कहा, कालिन्दी के तीर सखियाँ आकर यमुना के पानी में उतरी मुझे बुलाया। कहा तैरने आओ। मैने कहा नहीं तुम लौग तैरों। मैं तुम लोगों के कपड़े सम्भालूँ। तब एक सखी ने कहा, कन्हाइ आज जब्द होंगे।

वे सब पानी में क्रीड़ा करने लगे। पानी में जैसे कमल के फूल खिल उठे। गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। मैं उनके पास ही बैठ कर देख रहीं हूं। गोंसाई जी ने कहा—माँ खूब नाम करो देखोगी

कहाँ थी और कहाँ आई हो नाम के द्वारा ही सब तत्व प्रकाश होगा इतने में श्रीकृष्ण आकर मुझे कह रहे हैं, मुझे कपड़े दो, देखोगी कैसा मजा होगा। मैंने कहा यह कैसे हो सकता है, मेरे पास रख गई हैं। गोंसाई जी हंसते हंसते कहने लगे आज लौट जओ, कपड़े नहीं मिलेंगे। श्रीकृष्ण हंसने लगे और गोंसाई जी के साथ एक हो गये। ठीक होकर देख रही हूं आसन में बैठी नाम कर रही हूं।

२६ आश्विन

सवेरे—आसन में वैठ कर गोंसाई जी और माताठाकुरानी को प्रणाग करके उनके पास वैठी।

देखरही हूं एक छोटी लड़की और एक छोटा लड़का आकर खड़े हुये। मैंने कहा, तुम कोन हो ? लड़की ने कहा, उस दिन आई थी, तुम को घर पौंछा दे आई थी, भूल गई। तव याद आया कृष्णचन्द्र और राधारानी। लड़की ने कहा तुम फिर न गई ? मैं—किस के साथ जाऊँगी—काम में व्यस्त हैं। लड़के ने कहा, और एक दिन जाना, हम आकर ले जायेंगे। गोंमाई जी ने कहा—लौट आने के बाद एक दिन जाना, भजन के उपयुक्त स्थान। वह लड़का और लड़की कितने सुन्दर देखने में। गोंसाई जी ने कहा अच्छा एक दिन जायगी। तब दीनों हाथ पकड़ कर चले गये। मैंने गोंसाई जी से कहा, इस बार पुरी जाकर आपको और माताठाकुरानी को देखूंगी या नहीं ? उन्होने कहा—जब देखने की इच्छा होगी आसन में वैठने से ही देख सकोंगी इतने में महाप्रभु श्रीकृष्ण चैतन्य आकर गोंसाईं जी के पास बैठे। मैंने प्रणाम किया। सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद किया। गोंसाईं जी, माताठाकुरानी और महाप्रभु सब बातचीत करने लगे।

वह भाषा मैं समझ न सकी। महाप्रभु चले गये। मैंने गोंसाई जी से कहा, आपलोगों ने किस भाषा में बात की कि मैं समझ न सकी।

२८ आश्विन

सबेरे—आसन में बैठे नाम कर रही हूं देखा कि, गोंसाई जी, माता-ठाकुरानी, गुरुदेव, माँ जननी सब राधाकुण्ड के तीर में बैठे हैं। सखियाँ, राधारानी, श्रीकृष्ण कुण्ड में तैर रहे हैं। मुझे बुलाया। कहा स्नान करो। मैं—मै डुवकी लगाकर स्नान नही कर सकती। तब एक सखी पानी में से उठ आई ओर मेंरा हाथ पकड़ कर लाई ओर मुझे पानी में छोड़ दिया। मैंने डुवकी लगाई। फिर वे मुझे गोंसाई जी के पास दे गईं। गोंसाई जी ने कहा आज अष्टमी तिथी में राधाकुण्ड की सृष्टि हुई थी, इसलिये आज सब कोइ स्नान करते हैं। इसमें जब ही स्नान करोगी, सर्व तीर्थों के पानी में ज्ञान करने का फल होगा। मैंने कहा, मेरा तो स्नान करने का कोइ उपाय नही था, मैं श्रीवृन्दावन में थी, यहाँ कैसे आई, कुछ भी न समझ सकी, आप मुझे लाये हैं। गोंसाई जी हंसने लगे। श्रीकृष्ण, राधारानी, सखियाँ सब पानी में से उठ आये। कपड़े पहन कर सब वहाँ बैठे। सखियाँ अनेक फूल तोड़लाइं बड़े बड़े मालागुंथे गये। राधाकृष्णकों फूल के आसन में बैठाया गया; दोनों के गले में माला पहनाई गई। गोंसाई जी, माता-ठाकुरानी, गुरुदेव, माँ जननी उनके गले में भी माला पहनाई उसमें से फूल लेकर मैंने भी सबके चरणों में देकर प्रणाम किया। तब सखियों ने कमल के फूल से राधारानी के दोनो चरण ढक दिये। फिर सब अदृश्य हो गया।

शामको—आसन में बैठे नाम कर रही हूं गोंसाई जी और माता-ठाकुरानी बैठे हैं। गुरुदेव खड़े हैं। वीणायन्त्र में हरिनाम करते करते

देवर्षि नारद आये। मैने उनसे कहा, आप श्रीवृन्दावन परिक्रमा कर आये, मेरे सिरपर आपके श्रीचरणों की रज दीजिये। देवर्षि ने कहा, माँ श्रीवृन्दावन के रज में पैर लगेगा इसलिये मैं रज में पैर ही नही देता हूं। श्रीधाम वृन्दावन श्रीराधाकृष्ण जो का लीलास्थल है। उनके पैरों की रज से समस्त वृन्दावन भूषित है।

सब रज वैसे ही है जैसे उनके जीवित अवस्था में लीला करने के समय में थे। जो भाग्यवान है वही देख सकते हैं। तुमने सद्गुरु की कृपा लाभ की हैं इसीलिये देख पा रही हो। गोंसाइ जी तुमको दिंखा रहे हैं। जाने के समय गोंसाई जी माताठाकुरानी और गुरुदेव को प्रणाम करके चले गये।

२६ आश्विन

सवेरे—आसन में बैठे नाम कर रही हूं। देखा वहाँ खूब ज्योतिपूर्णा एक आठ नौ साल की बालिका की मूर्त्ति हैं। देखते देखते अदृश्य हो गया।

३० आश्विन

सवेरे—आसन में बैठी हूं। गोंसाई जी और माताठाकुरानी आसन में बैठे हैं। प्रणाम करके पूछा, कल जो ज्योतिर्मय मूर्त्ति देखी थी। एकबार दिखाई देकर ही क्यो चली गई, वह कौन थी? गोंसाई जी ने कहा, वह राधारानी थी। यह चिन्मयी मूर्त्ति थी, तुम खूब सौभाग्यवती हो कि एक बार देखा! मैं—आप ही तो दिखा रहे हैं, अच्छी तरह न देख सकी, चकित मात्र दर्शन किया। उन्होने कहा सब समय नाम करो फिर देखोगी।

लीलादर्शन हुआ। राधाकृष्ण दोनों एक दूसरे से लिपट कर खड़े हैं। वंसरी दोनों ही पकड़े हैं, अपूर्व दृश्य! वहाँ फूल थे मैंने सबके चरणों में फूल दिये। सखियाँ आरति के छन्द में नृत्य करने लगीं। तन्मय हो गइ हूं। तब देख रही हूं, गोंसाई जी पास ही खड़े हैं। मैंने पूछा देवर्षि नारद ने कहा, कि वह रज में पैर नही देते है। और हम जो दे रहे हैं। उन्होंने कहा, मनुष्यों में वह क्षमता कहाँ, स्थूल शरीर में ऐसा नही होता। तुम लोग जैसे गंगा में स्नान करती हो पहले पानी सिर में छुआकर फिर स्नान करती हो उसी प्रकार रज में पैर देनेके समय पहले साष्टांग प्रणाम करना फिर पैर देना। साष्टांग प्रणाम करने से वहुत कुछ अनुभूति होती है। यह सव गूढ़ बाते सब के समझ में नही आता पूछते भी नही। लिख रक्खो उपकार होगा। फिर कहा देवर्षि नारद जब आयेंगे तो उनके पैरों की तरफ और करना पैर रज में छुये नही रहते। मैं—प्रथम जब यहाँ आइ, तव क्यो नहीं कहा आपने? हंसने लगे।

१ कार्त्तिक

सबेरे—आसन में बैठी। गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। एक छोटा लड़का और एक छोटी लड़की सात आठ साल के होंगे, मेरे पास आये। मैंने कहा तुमलोग कौन हो? लड़की ने कहा तुम बहुत भूल जाती हो उस दिन तो आइ थी मैं राधा हूं। लड़के ने कह मैं कृष्ण हूं। मैं—तुमलोग क्या इस वृन्दावन के राधाकृष्ण हो न तुम लोगों का नाम राधाकृष्ण हैं। यह बात कहते ही दोनों खूब हंसने लगे। हंस कर लोट गये। प्राण ठंडा हो गया। तब लड़की ने मधुर सुर मे कहा हम इसी वृन्दाबन के राधाकृष्ण हैं। तुम तो हमारे निज जन हो। हम तुम

को बहुत प्यार करते हैं। तुम्हारे सिर दर्द हुआ है न इसलिये हम आये हैं। थोड़ा हाथ फेर दें अच्छा हो जायगा। मैं—तुम दोनों बच्चे सेवा करने आये हो? तब उन्होंने फिर कहा, हम अगर न करें तो कौन करेगा? हमारे सिवाय तुम्हारा कौन है। मैं—दो, क्या मधुर स्पर्श, सिर ठंडा हो गया। गोंसाई जी से कहा, उसबार जब वृन्दावन में आई थी तो दर्शन करके मन में हुआ था कि खूब हुआ। किन्तु इस बार आपजो सुधा-सिन्धु में डुबाकर लीला दर्शन करा रहे हैं। मनुष्य इस वस्तु की धारणा ही नही कर सकते। इस बार एक नया जीवन लाभ किया आपकी कृपा ही मेरा सम्बल है। तब उन्होंने कहा, तुमने प्रथम वार जों देख था वैसा ही और सब क्या देख सकते हैं? यह सब देखने का सोभाग्य सब को नही मिलता। धाम दर्शन से फल होगा इसी कामना से लोग देखते है। वही देखकर चले जाते है, यह वस्तु कहां पाओगी? सद्गुरु को आश्रय करके सब उनके ऊपर छोड़ कर एक दम हीन हो नाम करना पड़ेगा। कोइ बन्धन या आसक्ति नही रहेगी। ऐसा कि कोइ कर सक्ता है मां? संसार के आदमी छोड़ नही सकते।

२ कार्त्तिक

सवेरे—आसन में बैठे नाम कर रही हूं। गोंसाईजी और माताठाकुरानी को प्रणाम किया। वही दोनों छोटे लड़का लड़कि आकर मेरे दोनों गोद में बैठे। मैं—तुम लोग जो अब आये? लड़की—वह नाम ही हम लोग हैं। तुम नाम करती हो और हम लोगों की दौड़ कर आनेकी इच्छा होती है। गोंसाई जी भी तुमको बहुत प्यार करते हैं। फिर वे चले गये। गोंसाई जी और माताठाकुरानी से कहा अभी हाल राधारानी और श्रीकृष्ण आकर

मेरे गोद में वैठे थे। गोंसाई जी हंसने लगे। तव मैंने—आप और माताठाकुरानी तो राधाकृष्ण के रूप में आये थे। मुझे अब भुला न दीजिये। तब माताठाकुरानी ने कहा—तुम्हारे पास कुछ भी गुप्त नही रहेगा। तुम सब देख सकोगी व जान सकोगी। खूब नाम करो सब प्रकाश हो जायगा। मैंने प्रणाम करके कहा—आशीर्वाद कीजिये कि नाम में डूब जाऊँ। दोनों ने ही आशीर्वाद किया। फिर देख रही हूं यमुना के किनारे सखियाँ घूम रही हैं। पानी लेने आई हैं। मुझ से पूछा, श्याम को देखा हैं ? मैं—नही तो। सखियाँ सब ढूंढ़ने लगीं। कुञ्जवन की झाढ़ियों में छुपे थे सखियाँ देखते ही पकड़ कर ले आईं। सब पानी मे उतर कर जल क्रीड़ा करने लगे। मैं गोंसाई जी और माताठाकुरानी के पास वैठ कर यमुना के जल की शोभा देख रही हूं। जीबन मधुमय हो जा रहा है।

शासको—आसन में वैठी हूं। खूब जोर से नाम शुरु हो गया। किसी तरह अपने को स्थिर न रख सकी। बहुत देर तक चेष्टा करके भी कुछ कर न सकी तब नाम में डूब गई। देख रही हूं श्रीकृष्ण यमुना में नाव लेकर वैठे हैं। राधारानी और सखियाँ आईं। उन सब को नाव में उठा लिया। गोंसाई जी और माताठाकुरानी के साथ मुझे भी उठा लिया। समस्त यमुना का पानी इधर उधर करके फिर घाट में आकर खड़े हुये। इस प्रकार बहुत देर हो गई।

३ कार्त्तिक

सवेरे—आसन में वैठे नाम कर रही हूं गोंसाई जी और माताठाकुरानी को प्रणाम किया। यमुना का तीर। वही दोनों लड़का लड़की मेरे गोद में आकर वैठे। मैंने कहा, मैं यहाँ से चली जाऊँगी तब तो तुम लोगों को

नही देख पाऊँगी। तुम लोग कितना प्यार करते हो। तव उन दोनों ने मेरे गले से लिपट कर कहा तुमको क्या हम छोड़ सकते हैं। जहाँ नाम करोगी वहीं हम जायेंगे। आसन में वैठ कर नाम करने से गोंसाई जी के साथ हम जायेंगे देखोगी। यह सुन कर प्राण आनन्द से भर गया। उनको प्यार किया। कहा—मेरे पास तो कुछ नही है तुमको खाने दूं। गोपाल ही तो नन्दगाँव में जाकर माँ यशोदा के पास नबनी खा आता हैं। तव उस लड़की ने कहा तुम जव देश में जाओगी, पुरी जाओगी, तब हम लोगों को खूब खिलाना। अब जाँय फिर आयेंगे कहकर वे चले गये। तव दादामहाशय आकर कह रहे हैं दीदी, बहुत खूश हुआ। धन्य सद्गुरु की लीला! खूब नाम करो, मैंने कहा आपको उस दिन देखा था आज फिर देख रही हूं। दिन में क्यों नही आते हैं। तव उन्होने कहा दीदी यहाँ सव नियम बंधा हुआ है। जिसका जितना अधिकार है उससे ज्यादा होने का उपाय नही है। मैं जहाँ रह कर भजन करता हूं, गोंसाई जी जब कृपा करके लाते हैं तव आ पाता हूं। तुम्हारे ऊपर गोंसाई जी की खूब कृपा हैं। नित्य लीला दर्शन करा रहे हैं। मैंने प्रणाम किया। आशीर्बाद करके चले गये। उनकी मूर्त्ति खूब प्रफुल्ल और सौम्य थी।

शामको—आसन में वैठ कर गोंसाई जी और माताठाकुरानी को प्रणाम करके कहा कल जो······सुना व्रजगाँव के सब वृक्षोंके प्रेममय भाव की बात, मैं तो देख नही पाई। तव गोंसाई जी ने कहा वह तो सब उस भाव के समय छाप पड़ गये है, जैसे फोटो उठाया जाता है। जव व्रजलीला कराया था समस्त वृन्दावन प्रेम में सन कर वह भाव धारणा किया था (समस्त वृक्ष, लता, स्थावर, जंगल सब) उनके दर्शन से आनन्द होता है पर स्थायी नही रहता। तुम जो नित्य लीला दर्शन कर रही हो, यह प्रत्यक्ष है, प्रतिदिन

हो रहा है, प्राण के अन्दर लगा रहेगा, कभी नही हटेगा। फिर यह रस आस्वादन करने को अधिकार मिलेगा। इस प्रकार चलते चलते देखोगी कहाँ आई हो। महाप्रभु दो रसज्ञ भक्तों के साथ यह रस आस्वादन करते थे।

मैं--आपकी ही कृपा से श्रीवृन्दावन में आकर मैंने नूतन जीवन लाभ किया। यह जो छोटे राधारानी और श्रीकृष्ण जाते हैं उनके ऊपर मेरा वात्सल्य भाव क्यों होता है? गोंसाई जी--माँ वात्सल्य, सख्य, मधुर ये तीन व्रजभाव हैं। तुम्हारे गोपाल का भाव लेकर वे आते हैं। मधुर में जब पहुंचोगी तब जीवन धन्य हो जायगा और नित्य लीला के साथ मिल जाओगी। फिर महाप्रभु के भाव में बिभोर हो कर रस आस्वादन करोगी। मैं--राधारानी और श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि तुम नाम करने के लिये आसन में बैठते ही हम तुम्हारे पास दौड़ जायेंगे। नाम तो आसन में बैठ कर सब कोई करते हैं, वहाँ नही जाते? तब उन्होंने कहा साधकों के कुछ लक्षण है। गीता में जहाँ श्रीभगवान अर्जुन को कह रहे है कि जो भक्त हमार प्रिय है उसके यह सब गुण रहना चाहिये, यह तो पढ़ा है? इसलिये सब को दर्शन कैसे मिलेगा जब जिसकी वह अबस्था आयेगी तब उसको दर्शन मिलेगा। नाम करते करते सब ठीक हो जाता है अगर ठीक नाम करे। वह क्या कोई कर सकता हैं माँ। बैठ कर नाम करना ही उनके लिये कष्टदायक है।

४ कार्त्तिक

सबेरे—आसन में बैठ कर नाम कर रही हूं। गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। प्रणाम किया। इतने में भक्तराज महाबीर आये।

उन्होने गोंसाई जी और माताठाकुरानी को प्रणाम किया। मैंने उनको प्रणाम किया। कहा क्या आप भी रज में पैर नही देते ? उन्होने कहा तुमने कैसे जाना ? तब मैंने कहा, उस दिन देवर्षि नारद अये थे, उन्होंने कहा। इसी लिये मेरे मन में हो रहा है कि आप भी तो महाभक्त हैं इस लिये पूछ रहो हूं। उन्होने कहा, तुम्हारा अनुमान सत्य है। गोंसाई जी ने तुम्हे कृपा किया हैं तुम्हारे पास सब प्रकाश होगा। मैंने कहा आपके बक्ष में जो "सीताराम" लिखा है दया करके एकबार दिखायेंगे ? मेरी देखने की इच्छा हो रही है। तब महावीर उठ खड़े हुये। उस विशाल बक्ष में "सीताराम" नाम उज्वल बड़े बड़े अक्षरो में लिखा था। उस लिखे के भीतर "सीताराम" की मूर्त्ति है। क्या अपूर्व दर्शन। महाबीर को और न देख मिला (राम लिखे हुये दोनों अक्षरों के भीतर राम की और सीता लिखे दो अक्षरो के बीच में सीता की मूर्त्ति) गोंसाई जी और माताठाकुरानी वहीं बैठे थे। सीताराम के साथ मिल कर एक होगये।. मैं मुग्ध नयन में देखते देखते डूब गई। धन्य भक्तराज! आज गोंसाई जी ने कृपा कर क्या अपूर्व दृश्य दिखाया। वर्णन करने की शक्ति मेरे में कहाँ! मैंने तब उन लोगों को प्रणाम किया। आशीर्वाद करके अदृश्य हो गये। वही (छोटे) राधारानी और श्रीकृष्ण आकर गोद में बैठे। मैंने पूछा इतनी देरी करके आये ? राधा ने कहा चोर चोर खेल रहीं थी। कृष्ण एसे छिपे थे कि किसी भीं तरह नही ढूँढ़ पा रही थी फिर जैसे ही देख पाई तुम्हारे पास दौड़ कर आई। सखियाँ अभी भी ढूँढ़ रही हैं। दोनों मेरे दो गोद में बैठे। तब मेरा गोपाल आँख मीच मीच कर देख रहा है। मैंने उसे कहा तुम बीच में बैठो। गोपाल बैठा फिर सब ओम्फल हो गया।

५ कार्त्तिक

सबेरे—आसन में वैठी हूं। गोंसाई जी और माताठाकुरानी को प्रणाम करके देखा कालिन्दी का तीर। गोंसाई जी और माताठाकुरानी वठे हैं। राधारानी और सखियाँ पानी में तैर रही हैं। श्रीकृष्ण भी आकर पानी में उतरे और तैरने लगे। बहुत देर बाद सब उठ आये। कपड़े पहन कर राधारानी के मन में क्या उदय हुआ मालुम नही मान कर बैठीं। श्रीकृष्ण ने बहुत खुशामद किया। चरण पकड़ कर भी वहुत खुशामद किया पर किसी भी तरह मान नहीं टूटा गोंसाई जी ने श्रीकृष्ण को जाने क्या कहा कृष्ण जी कुञ्जबन में जा छिपे। जैसे ही कृष्ण हट गये, वैसे ही मानिनी का मान टूट गया, सखियों से पूछा कृष्ण कहाँ गये, सखियों ने कहा, हम क्या जानें, बात बात में मान करना, कितना खुशामद किया, अन्त में चले गये। राधारानी ने कहा, और अब मान नही करुँगी, तुम बुला लाओ। तब सखियाँ जा कर श्रीकृष्ण को बुला लाईं। दोनों युगल रूप में खड़े हुये। सखियाँ नृत्य करने लगीं। अपूर्व दृश्य! गोंसाई जी ने कहा सब सत्य है लिख रक्खो। प्राण भर कर देखो। देखते देखते अदृश्य हो गया।

६ कार्त्तिक

सबेरे—आसन में वैठे नाम कर रही हूं देख रही हूं श्रीगुरुदेव खड़े हैं, प्रणाम किया। कहा, माँ कुछ खाने को दे सकती हो, मैं—क्या खायेंगे? यहाँ कहाँ क्या मिलेगा। उन्होने कहा जो कुछ है बना दो। घर में थोड़ा आटा था, पूरी बना कर मिठाई से भोग दिया।*

---

* उस दिन किसी कारण बशतः मै उपबासी थी।

७ कार्त्तिक

सवेरे—आसन में बैठ कर नाम कर रही हूं। गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। प्रणाम करके उनके पास बैठी यमुना का तीर। केलिकदम्ब के वृक्ष के नीचे चारजन मुनि ज्योतिर्मय मूर्त्ति में आयें और गोंसाई जी और माताठाकुरानी को प्रणाम किया, यह सब मैं देख रही हूं। गोंसाई जी ने मुझे उनको प्रणाम करने के लिये कहा। मैंने प्रणाम किया। उन्होने मंगल हो कहकर आशीर्वाद किया। मैं उनको नही पहचान रही थी उन्होने मेरी मन की बात समझ कर कहा। हम लोगों का नाम सनक, सनन्द, सनातन और सनतकुमार है। गोंसाई जी के साथ दर्शन करने आये हैं। माँ परम सौभाग्य कि तुम्हे सद्गुरु का आश्रय मिला है। उनकी कृपा लाभ की है। श्रीवृन्दावन लीला दर्शन करके गोंसाई जी के चरण में मग्न हो जाना। सब पूर्ण होगा। देखोगी क्या अपूर्व राज्य। गोंसाई जी के कृपा बिना किसीको यह वस्तु नही मिलती। सब समय नाम में मग्न रहना। इस अवस्था में सद्गुरु का साथ होता है। नाम मत छोड़ना। मैं उनको देख कर और उनकी बात सुन कर खूब आनन्द कर रही हूं। फिर वे गोंसाई जी और माताठाकुरानी को प्रणाम करके चले गये। मैंने गोंसाई जी से कहा, कितना आनन्दमय और ज्योतिपूर्ण चेहरा। उन्होने कहा, हरिनाम में नाम के साथ वे एक हो गये हैं। मैंने पूछा, उन्होने क्या किसी ने भी रज में पैर नही दिया? वह हंसने लगे। फिर देखा सखियाँ राधाकृष्ण सब आये। आज कुसुम कानन में से फूल तोड़ कर राधारानी की वेणी रचना होगी। सखियों को लेकर श्रीकृष्ण फूल तोड़ने गये। राधारानी माताठाकुरानी के गोद के पास बैठी रहीं। सखियाँ और श्रीकृष्ण फूल ले आये। श्रीकृष्ण राधारानी के बालों में फूल दे देकर वेणी रचना की। क्या सुन्दर हुआ!

राधा जैसे फूलमयी हो गई। तब सखियाँ राधारानी को श्रीकृष्ण के बाँई ओर खड़ा करा दिया, और सब मिल कर नृत्य गीत करने लगीं। गोंसाई जी, माताठाकुरानी राधाकृष्ण के साथ मिल कर एक हो गये। अपूर्व दृश्य हुआ। मैं धन्य हो गई। मतवाली हो गई हूं। जब ठीक (प्रकृतिस्थ) हुई देखा वे अदृश्य हो गये हैं। मेरे दोनो गोद में वे छोटे राधाकृष्ण आकर बैठे। मैं—इतनी देर कहाँ थे? राधा—खेल रहीं थी इसलिये आने में देर हुई। हमारे न आने से तुम्हे कष्ट होता हैं न? हम तुमको खूब प्यार करते हैं। वह नाम ही तो हम लोग हैं। मैं—सब कोई तो नाम कर रहे हैं वहाँ क्यो नहीं जाते? तब कृष्ण ने कहा, वे नाम करते हैं पर हमलोगों को नहीं चाहते। बहुत वासना कामना रहती है इसलिये हम नहीं जाते जो सब कुछ छोड़कर केवल हम को चाहेगा, हम उसके पास जाते हैं। यह राधा और मैं एक हूं।

८ कार्त्तिक

सवेरे—तड़के उठ कर देख रही हूं गोंसाई जी, माताठाकुरानी और गुरुदेव खड़े हैं। खूब अच्छी तरह दर्शन हुआ। फिर आसन में बैठे कर देखती हूं कि गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। निकुञ्ज बन में श्रीमति राधा और श्रीकृष्ण बैठे हैं। सखियाँ फूल तोड़कर ले आईं। मुझे माला गंथने को कहा। मैं खूब खुश होकर माला गुंथने लगी। सखियाँ भी माला गुंथने लगी हैं। बहुत माला गुंथे गये। उसके बाद गोंसाई जी और माताठाकुरानी, और राधाकृष्ण को वे सब माला पहनाये गये। इतने में देवर्षि नारद आये ओर उन सबको प्रणाम किया। तब सखियों ने नारद को कहा, आप वीणा यन्त्र में गान करिये हम सब नृत्य करें श्रीनारद यहा

आनन्द से बीणाद्वारा राधाकृष्ण लीला गान करने लगे। सखियाँ नृत्य करने लगीं। क्या अपूर्व और मनोरम दृश्य! प्राण आनन्द से भर गया। देखते देखते कहाँ डूब गई। जब बाह्यज्ञान हुआ तो देखा आसन में बैठी हूं। क्या देख रही हूं कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। गुरुकी कृपासे जीवन धन्य हो जा रहा है। वही छोटे राधाकृष्ण आकर दोनों मेरे दोनो गोद में बैठे। मैं--खेल रही थी। राधा--माँ यशोदा के पास नवनी खाकर खेलने गइ थी। देखा कि तुम्हारा गोपाल भी खा रहा है। मैं---यहाँ से जल्दी चला जाना पड़ेगा तब दोनों ने कहा दुःख मत करो, तुम जहाँ कहीं रहोगी वहीं गोंसाई जी तुम्हे वृन्दावन लीला दर्शन करायेंगे। हम लोगों को भी देख सकोगी। आनन्द करो, कोई चिन्ता नही।

शामको--आसन में बैठ कर नाम कर रही हूं। गोंसाईं जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। सखियों के सांथ राधारानी आई। ज्योतिर्मय मूर्त्ति। मैं मुग्ध हो कर देख रही हूं। इतने में श्री कृष्ण ने आकर राधा से कहा आज यमुना में नही जाओगी? राधारानी ने कहा, नहीं। आज यहाँ पाशा खेला जायगा। श्रीकृष्ण ने कहा अच्छी बात, तुम अगर हारो तो क्या दोगी? राधारानी ने कहा, मेरे गले में जो माला है तुम्हे पहना दूँगी। और अगर तुम हारो तो क्या दोगे? श्रीकृष्ण ने कहा मेरा तो सब कुछ मैंने तुम्हे दिया है, केवल यह बंसरी है एक बार बजाने दूँगा। राधा ने कहा इस एक दम छिपा रक्खूंगी तब श्रीकृष्ण ने कहा गोंसाईं जी साक्षी रहे, किस की हार और किस की जीत होगी बता देंगे। उसके बाद क्या हुआ देख न सकी। देखा आसन में बैठी हूं।

९ कार्त्तिक

आज भी सबेरे बिस्तरे से उठने से पहले गोंसाईं जी, माताठाकुरानी और गुरुदेव को सामने देखकर प्रणाम कर के उठी। फिर गोंसाँई जी और माताठाकुरानी वैठे हैं यमुना के किनारे तमाल वृक्ष के नीचे एक वेदी बनी है। सखियों ने कहा राधारानी आज वहाँ सूर्य्य पूजा करेंगी। पूजा के लिये सखियें ने धूप द्वीप इत्यादि पूजा की सामग्रि लाकर रक्खी। कितना सुन्दर करके बेदी पर आलपना दिया गया। राधारानी का अपूर्व वेश। पैर दोनो मेरे आखों के सामने हैं। उन्होने सूर्य्य पूजा की। वहाँ बहुत फूल थे। मैने लेकर गोंसाई जी, माताठाकुरानी, राधारानी और सखियों के चरणों में दिये। उसके बाद श्रीकृष्ण वंसरी बजाते बजाते वहाँ आये तब सखियों ने राधारानी को श्रीकृष्ण के बाई ओर खड़ा कर दिया और नृत्य छन्द में आरति करने लगी। फिर गोंसाई जी, माताठाकुरानी, राधाकृष्ण सब मिलकर एक होगये। गोद में आकर फिर वही दोनों राधाकृष्ण वैठे। मैं—कहाँ थे? राधाकृष्ण—यही पास ही वंशीवट में, खेलते खेलते तुम्हे देखने के लिये दौड़ आई। फिर जाऊँ कह कर दोनों दौड़ कर चले गये।

१० कार्त्तिक

सवेरे—आसन में वैठ कर नाम कर रही हुं। गोंसाई जी, माता-ठाकुरानी, गुरुदेव सब को प्रणाम किया। गोंसाई जी ने कहा माँ तुम्हे पुरी जाना पड़ेगा।…बात पूछने से कहा, पुरी जाना ही अब उसके लिये मंगल है। वही छोटे राधाकृष्ण ने आकर कहा, पुरी जाकर खूब भोग देना। हम तुम्हारे साथ खायेंगे। फिर दादागोंसाई आये। मैने सब को प्रणाम किया दादागोंसाई ने कहा, माँ तुम्हारा जीवन मधुमय हो जायगा,

थोड़े दिन वाकी हैं। यहाँ जिस उद्देश्य में ठाकुर लाये थे सिद्ध हो गया। कुछ दिन वाद पुरी जाकर पूर्ण आनन्द में डुब जाओगी। दुर्लभ अवस्था लाभ करोगी। तुम्हे देख कर खूब आनन्द हुआ। खूब नाम करो माँ। सर्वदा नाम मे डूबी रहो। नाम में डूब कर रह सकने से नामी का स्वाद मिलता है। तव सर्व अङ्ग में नाम की अनुभूति होगी। प्रेमानन्द में मग्न रहोगी। आशीर्वाद करके चले गये। मेरी भी वह अवस्था चली गई।

११ कार्त्तिक

सबेरे—आसन में वैठे देख रही हूं कि गोंसाई जी, माताठाकुरानी बैठे हैं। लहंगा पहने ओढ़ना ढके व्रजगाँव की व्रजभाईयाँ वैठी हैं। गोंसाई जी के साथ क्या जाने क्या बात कर रही है मैं समझ न सकी। प्रथम दिन वृन्दावन में आकर जिन को देखा था वही सब आई हैं मालुम हुआ। राधारानी और सखियाँ आईं। श्रीकृष्ण कदम्ब के नीचे वंसरी बजा रहे हैं। सखियों ने राधारानी को श्रीकृष्ण के वाईं ओर खड़ा कर दिया। दोनों लिपट कर खड़े होकर वंशी बजाने लगे।

शामको—लाला जी के कुञ्ज में गई। राधारानी, कृष्णचन्द्र और ललिता सखी को देखा। खूब नाम होने लगा। वैठ गई। तब कृष्णचन्द्र और राधारानी आकर मेरे दोनो गोद में वैठे। क्या आनन्द वह कैसे लिखूँ। कुछ देर बाद प्रकृतिस्थ हुई।

१२ कार्त्तिक

सबेरे—आसन में वैठे नाम कर रही हूं। गोंसाई जी और माता-ठाकुरानी खड़े हैं। खुरुदेव खड़े हैं। सबको प्रणाम किया। उन्होने

आशीर्बाद किया। गुरुदेब--माँ व्रजधाम का लीला दर्शन किया। अब यहाँ रहने की आवश्यकता नहीं है! कुछ दिन बाद पुरी जाना पड़ेगा। महाप्रभु उस दिन यह बात कह गये। लक्ष्य स्थिर रखना। नाम में लीन रहो। और किसी तरफ मत देखना। मैं—मैं कुछ नही जानती। आप जो करायेंगे वही होगा।

सबेरे—आसन में बेठी हूं। गोंसाई जी और माताठाकुरानी हैं। प्रणाम किया कहा, आज सब परिक्रमा करने गये, मेरे पैर में तो दर्द है, जा न सकी। तब गोंसाई जी ने कहा, तुम्हारी तो व्रजमंडल परिक्रमा हो गई है। मैं—कब हुआ मुझे तो याद नहीं आ रहा है। तब उन्होने कहा--जब उद्धब तुम्हे ले जाते थे, तब पहले व्रजमंडल परिक्रमा करके फिर ऊपर उठते थे। यहाँ जो कुछ करने को था सब कुछ हुआ है। मैं—(यहाँ जो यह सब) युगल होकर दर्शन व परिक्रमा करना पड़ता है इसके माने क्या हैं? कहा—श्रीवृन्दाबन में श्रीकृष्ण ही एक मात्र पुरुष हैं, उनको हृदय में स्थापित करना पड़ता है। आत्मा के साथ परमात्मा का मिलन करके सब काम करना पड़ता है। ऐसा करने से ही युगल में दर्शन व परिक्रमा होता है। मनुष्य तो यह बात समझते नही भूल करते हैं। मैं—मैंने तो आपका (सद्गुरु की) आसन हृदय में स्थापित की है, गुरुदेव और आप तो एक ही हैं। तब उन्होने कहा माँ ठीक कहा है, गुरुगोविन्द में कोइ भेद नही है। श्रीवृन्दाबन में महाप्रभु ने जो कुछ दर्शन किया था, पुरी में जाकर वही सब लीलारस आस्बादन की बात महाप्रभु कह गये। फिर वही छोटे कृष्ण आये। मैं—आज राधा कहाँ? अकेले आये हो, यह कहते कहते राधा आकर कह रही हैं, यह तो मैं आई हूं। (कृष्ण को दिखा कर) आज मुझे छोड़ कर चले आये। मेरे साथ झगड़ा किया है। मैं—किस लिये

झगड़ा हुआ ? राधा—वही बंसरी लेकर और क्या। बंसरी क्या हुआ ? राधा ने मेरी तरफ देखकर थोड़ा हंस कर आँख मीच कर कहा, क्या मालुम कहाँ डाला है। अब मुझे कह रहे हैं कि तुमने ली है, क्या करुँ कहो तो। श्रीकृष्ण ने कहा, तो कहाँ गया ? मेरे हाथ में ही तो था। राधा को देखने से ही सब भूल हो जाता है। उसी समय लिया है। तब गोंसाई जी और माताठाकुरानी उनका झगड़ा सुन कर खूब हंस उठे। राधारानी को कहा और क्यों अब दे दो। तव राधारानी हंसते हंसते कपड़े के अन्दर से बंसरी निकाल कर कृष्ण के हाथ में देते ही दोनों खड़े होकर वंसरी बजाने लगे। फिर देखा गोंसाई जी, माताठाकुरानी, गुरुदेव सब राधाकृष्ण के साथ मिल कर एक हो गये।

शामको—आसन में वैठी हूं। (आज सब श्रीराधारानी का चरण दर्शन करने जा रहे हैं।) गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। प्रणाम किया। उन्होंने आशीर्वाद किया, कहा आज राधारानधी का चरण दर्शन करना चाहिये। तुम यहीं दर्शन करोगी। देख रही हूं एक कुञ्ज के अन्दर राधारानी और श्रीकृष्ण एक फूल के सिंहासन में बैठे हैं। राधारानी के दोनों चरण कमल के फूलों से ढके हैं। तब मन में हो रहा है कि गोंसाई जी जो कह रहे है चरण दर्शन करना चाहिये, तो चरण तो फूल से ढके हैं। व्याकुल होकर श्रीमती राधारानी के चरणों की ओर देखे हूं। तब मैंने देखा वह राशीकृत कमल के फूल (खुद ही) चरण से हट गये। तब वह देवदुर्लभ चरण देख सकी। क्या अपूर्व दृश्य। वह अपूर्व दोनों श्रीचरण लाल महावर से रंगें हैं। चारों ओर फूल बने हुये मणिमय अलंकार पैर में पहने हुये हैं। उन सब रत्नों से ज्योति निखर रही है। उस शोभा की कैसे बर्णना करुँ। एक बार दीनो चरण फूल से ढक रहे हैं

फिर एक फूल हट कर उस मनोहर दोनों श्रीचरणों के दर्शन हो रहे हैं। बहुत देर तक उस प्रकार दर्शन होने लगा दर्शन करते करते लीन हो गई।

१४ कार्त्तिक

सबेरे—आसन में बैठी। गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। प्रणाम किया यमुना तीर। वही दोनो छोटे राधाकृष्ण आकर मेरी गोद में बैठे। मैं—आज झगड़ा नही हुआ ? कृष्ण—मैं तो झगड़ा नही करता, राधा ही तो बात बात में रुठ जाती है। राधा मुस्करा रही है कहा—गोपाल कहाँ ? गोष्ठ में गया है शायद ? गोंसाई जी आज कहाँ खेल रहे थे ? राधा—निधुबन में। उसके बाद सब अदृस्य हो गया।

१५ कार्त्तिक

सबेरे—आसन में बैठी नाम कर रही हूं। गोंसाई जी, माताठाकुरानी बैठे हैं। गुरुदेब और महाप्रभु आये। गोंसाई जी—पुरी जाने का प्रयोजन है। वहाँ जाने से उसके मन का परिबर्त्तन होगा। कर्म शेष होने पर ही आनन्द मिलेगा। मैं—आप कौन हैं कहिये। अभी वह समय नही आया है। थोड़ी देर है। दृढ़ बिश्वास चाहिये। तुम ही कह देना। गुरुदेब··· उसे पुरी जाने को कहना आनन्द मिलेगा यहाँ अब तुम्हारे रहने की जरुरत नहीं मैंने प्रणाम किया। वे आशीर्बाद करके चले गये। वे दोनो राधा-कृष्ण आकर गोद में बैठे। मैं—कहाँ खेल रहे थे ? राधा—अभी खेलने नहीं गई निकुञ्ज बन से आ रही हूं। आज यमुना के तीर में खेलूँगी। फिर सब अदृस्य हो गया।

१६ कार्त्तिक

सबेरे—आसन में बैठे नाम कर रही हूं। देख रही हूं गोंसाई जी और माताठाकुरानी यमुना के तीर बैठे हैं। वहाँ जाकर प्रणाम करके पास में बैठी। गोंसाई जी को कहा यहाँ से तो चली जा रही हूं। वहाँ जाकर साधन में बाधा न हो। आसन में बैठने से ही आपलोगों को देख पाऊँ। यहाँ जैसे मालुम होता है कि आपलोगों के पास ही हूं बाहर रहने से आपका संग न छूट जाय। गोंसाई जी—कोई चिन्ता मत करो। हम सब समय तुम्हारे बीच मे ही रहेंगे। गोंसाई जी जिस प्रकार कृपा कर रहे हैं। मैं नही जानती कौन तपस्या के फल स्वरुप सद्गुरु साक्षात रुप में दर्शन दे रहे हैं। जीवन मधुमय कर दे रहें हैं। उन दोनों ने ही मेरे सिर पर हाथ रक्खा और कहा डर नही जब ही नाम करोगी देख पाओगी। उनके चरण में प्रणाम करके निश्चिन्त हुई। वही दोनों राधाकृष्ण आकर गोद में बैठे। राधा—क्या बात चीत हो रही है ? चली जाओगी तो क्या होगा ? हम सब तुम्हारे पास रहेंगे। सखियाँ पानी लेने आई हैं। मैं—मैं रास के बाद चली जाँऊगी। तुमलोग मुझे भूल न रहना तब सब ने कहा, गोंसाई जी ने तो कहा है, वहाँ भी यही वृन्दाबन लीला दर्शन करोगी सद्गुरु की कृपा जो लाभ करता है उसके लिये क्या कुछ अप्राप्य रहता है ? इच्छा मात्र सब पूर्ण हो जाता है। यह कह कर वे सब चले गये। राधारानी और श्रीकृष्ण आकर दोनों युगल रुप में खड़े हुये। गोंसाई जी, माताठाकुरानी उनके साथ एक हो गये, अपूर्व दर्शन। लिख कर क्या बताऊँ।

१७ कार्त्तिक

सबेरे—आसन में बैठे नाम कर रही हूं। गोंसाई जी और माताठाकुरानी बैठे हैं। देवर्षि नारद आये। उन्होने उनको प्रणाम किया। मैंने उनको प्रणाम किया। कहा चली जाँऊगी आशीर्वाद करिये कि नाम में डूब जांऊ। और सदगुरु ने कृपा कर जो अबस्था दी हैं उसी में लीन हो रहूं। श्रीनारद ने कहा माँ, तुम्हें गोंसाई जी ने कृपा की है। जहाँ रहोगी वहीं वृन्दाबन लीला दर्शन करोगी। तुम्हारे हृदय में गोंसाई जी का आसन पड़ा है। उनकी सब लीला तुम्हारे अन्दर प्रकाश होगा। कुछ दिन बाद पुरी जाकर व्रजलीला रस आस्वादन होगा। तुम्हारे उपर गोंसाई जी की असीम करुणा है। उस के बाद देख रही हूं, श्रीकृष्ण राधारानी युगल रुप में खड़े हैं। गुरुदेव और माँ जननी आये। वे भी खड़े हुये। तब सखियाँ गोंसाई जी, माताठाकुरानी, गुरुदेव, माँ जननी, श्रीराधा और श्रीकृष्ण को चारो ओर घिर कर नृत्य करने लगीं। क्या अपूर्व दृश्य ! लीन होकर देख रही हूं। फिर सब अदृश्य हो गये। गोंसाई जी और माताठाकुरानी ने कहा …उसको निर्भर करने को कहा, चिन्ताका कोइ कारण नही है, समय में सब प्रकाश होगा। फिर वे छोटे राधाकृष्ण आकर दोनों गोद में बैठे। मैं—खेलने नहीं जाओगी ? राधा—अब जाँऊगी, तुम्हारे पास न आने से खेल अच्छा नही लगता। तुम्हारे आसन में बैठते ही तुम्हारे गोद में बैठने की इच्छा होती है। मैं—कहाँ खेलोगी ? यमुना किनारे, यह कहकर वे भाग गये।

१८ कार्त्तिक

सबेरे—आसन में बैठी हूं। गोंसाई जी और माताठाकुरानी को

प्रणाम कर पास ही वैठी वे राधाकृष्ण आकर गोद में बैठे। मैं किसी काम के लिये उठ रही हूं। उन्होने कहा--आज जल्दी जल्दी कहाँ जा रही हो? मैं---चाय बनाने जा रही हूं तुमलोग पीओगे। गोंसाई जी के साथ तो रोज ही पीती हूं। फिर सब ओझल हो गया।

१६ कार्त्तिक

सवेरे -- गोंसाई जी, माताठाकुरानी बैठे हैं। प्रणाम करके गई थी। पास जाकर वैठी। गोंसाई जी को कहा---कल वृन्दाबन दर्शन में राधाबाग देख कर खूब अच्छा लगा। कितना सुन्दर रज, देखकर खूब आनन्द हो रहा था। वह नीम का पेड़ देखा। जहाँ से वह वैष्णव आप के पास प्रकाश हुये थे। देवी कात्तायणी को देखकर भी खूब अच्छा लगा। नाम की भी खूब कृपा की। इसी कात्तायणी को पूजा करके व्रजगोपियाँ श्रीकृष्ण को पति रुप में लाभ किया था। गोंसाइ जी ने कहा यही यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई योगमाया हैं। श्रीकृष्ण के वृन्दाबन लीला में योगमाया रुप में प्रकाश हुई थी। बड़े महाप्रभु देखने गई थी। देख कर अच्छा लगा पर भीतर स्पर्श नही हुआ। अब महाप्रभु को जिस बेश में देखती हूं वही मुझे बहुत अच्छा लगता है। प्रेम के ठाकुर उनका वह मुण्डित मस्तक। कौपिन बहिर्वास पहने। कमण्डल हाथ में। दोनों आँखे भाव मे डगमगा रहे हैं। काञ्चन बर्ण। सहास्य बदन। अपूर्ब मनोहर रुप। गोंसाई जी ने कहा जिस भक्त का जो भाव होता है। वह उसी भाव में देखता है। बड़े महाप्रभु जिन्होने प्रतिष्ठा की सन्तान भाव लेकर की है। इस लिये वैसा बेश किया है। खुद आनन्द पायेगा इसलिये। तुम जो देख रही हो यही उनका प्रकृत रुप है। तब मैंने कहा और एक बार महाप्रभु को

क्या नही देखूंगी। गोसाई जी—खूब ज्यादा इच्छा जब होगी तब पाओगी। मैं—अभी खूब इच्छा हो रही है। कहते कहते देखा प्रेम के ठाकुर आ खड़े हुये। मैने प्रणाम करके कहा, आज मेरे सिर पर आपके चरण देने पड़ेंगे। वे हंसते हंसते वह देवदुर्लभ योगीजनबाञ्छित श्रीचरण मेरे सिर में दिये। आँख खोलकर देखा गोंसाई जी के चरण। वह भाव हट जाने पर महाप्रभु को खड़ा हुआ देखा। मैं—इस बार पुरी में जगन्नाथ वल्लभ में आपकी जो मूर्त्ति हैं, राय रामानन्द के साथ वात कर रहे हैं। एक दम प्रत्यक्ष दर्शन हो। आपके पास यही प्रार्थना है। गोंसाई जी महाप्रभु की तरफ देख कर हंसे। महाप्रभु ने कहा ऐसा ही होगा माँ। गोंसाई जी—सब लिख रक्खो। प्रत्यक्ष सत्य घटना है। गुरु कृपा के बिना कोई इसकी मर्यादा नही कर सकता इस लिखे हुये के अन्दर समस्त लीला कीं शक्ति लगी रही। इस श्रीवृन्दावन दर्शन में जिसकी खूब व्याकुलता है पर आ नही पा रहा है उसके पास यह लीला पाठ करना। तुम्हारे मुँहसे सुनने पर यह आनन्द उसको स्पर्श करेगा। तुम्हारे ऊपर मैने शक्ति संचार किया।

२० कार्तिक

सवेरे—आसन में बैठी हूं। गोंसाई जी, माताठाकुरानी, गुरुदेव वहाँ बैठे हैं। उनको प्रणाम कर पास ही बैठी। मैं—कल सब देवालय दर्शन करने गयी थी। अच्छा लगा पर, रासलीला दर्शन नही हुआ, गोंसाई जी ने कहा—रामलीला दर्शन करने की इच्छा हो रही है? मैंने कहा, एक दिन दिखाया था, कितना मधुर और मनोरम दृश्य। गोंसाई जी के साथ बात कर रही हूं देखा यमुना पुलिन में सब गोपियों,

अष्ट सखियों के साथ श्रीमति राधारानी हैं। जितने गोपी उतने कृष्ण बीच में राधाकृष्ण युगल रुप में खड़े हैं। चारो तरफ सब सखियाँ कृष्ण कण्ठ आलिंगन करके नृत्य कर रही हैं। क्या देख रही हूं। अपूर्व ! जिसकी कोई तुलना नहीं, धन्य ठाकुर, तुम्हारी कृपा मेरी कोई भी इच्छा अपूर्ण न रही। देखते देखते सब अदृश्य हो गये। गोंसाई जी, माताठाकुरानी, गुरुदेव इनके पास बैठी हूं। गोंसाई जी—कैसा दर्शन हुआ ? मैं—क्या कहूं भीतर आनन्द की तरंग उठ रही है, मुँह से बात नही निकला। गोंसाई जी मेरी अवस्था समझ कर मेरे सिर पर हाथ रख कर कहा स्थिर हो। माँ बहु भाग्य होने पर हृदय मन्दिर में रासलीला दर्शन होता है। आज तुम्हारी वृन्दावन में बास करने का आखिरी दिन है। इसलिये रासलीला दर्शन मिला, श्रीवृन्दावन में जो राधाकृष्ण की श्रेष्ठ लीला है। इसके बाद और लीला नही हैं। सब समय नाम में मग्न रहो। नाम रस में डूब जाओ। पुरी जाकर यह सब लीलारस आस्वादन होगा। फिर वे छोटे राधाकृष्ण आकर मेरी गोद में बैठे। मैं—कल रातको यमुना पुलिन में रासलीला हुआ तुम लोग तो थे ? राधा—तुम ने भी तो अभी देखा। मैं--तुमने कैसे जाना राधा हंस रही है। कहा, मैंने तो तुमको गोंसाई जी के साथ देखा। फिर सब अदृश्य हो गया।

२१ कार्तिक

सबेरे--देश में लौटने के लिये वृन्दावन स्टेशन में आकर ट्रेन में बैठी। ट्रेन छोड़ने के बाद ही बैठी हूं। थोड़ी नींद में देखा श्रीराधाकृष्ण को लेकर सखियाँ मण्डली बना कर नृत्य कर रही हैं। अपूर्व सब ज्योतिर्मय

मूर्त्ति ? समस्त वृन्दावन लीला हृदय के अन्दर प्रकाश हो उठा। गोंसाई जी, माताठाकुरानी, राधाकृष्ण सखियों को दर्शन करते करते आनन्द में मग्न हो गईं। जव मथुरा स्टेशन में आकर गाड़ी रुकी तब वह अवस्था न रही। प्राण में खूब आनन्द हो रहा है। ठाकुर की कृपा से जीवन धन्य कर देश में लौट आई।